

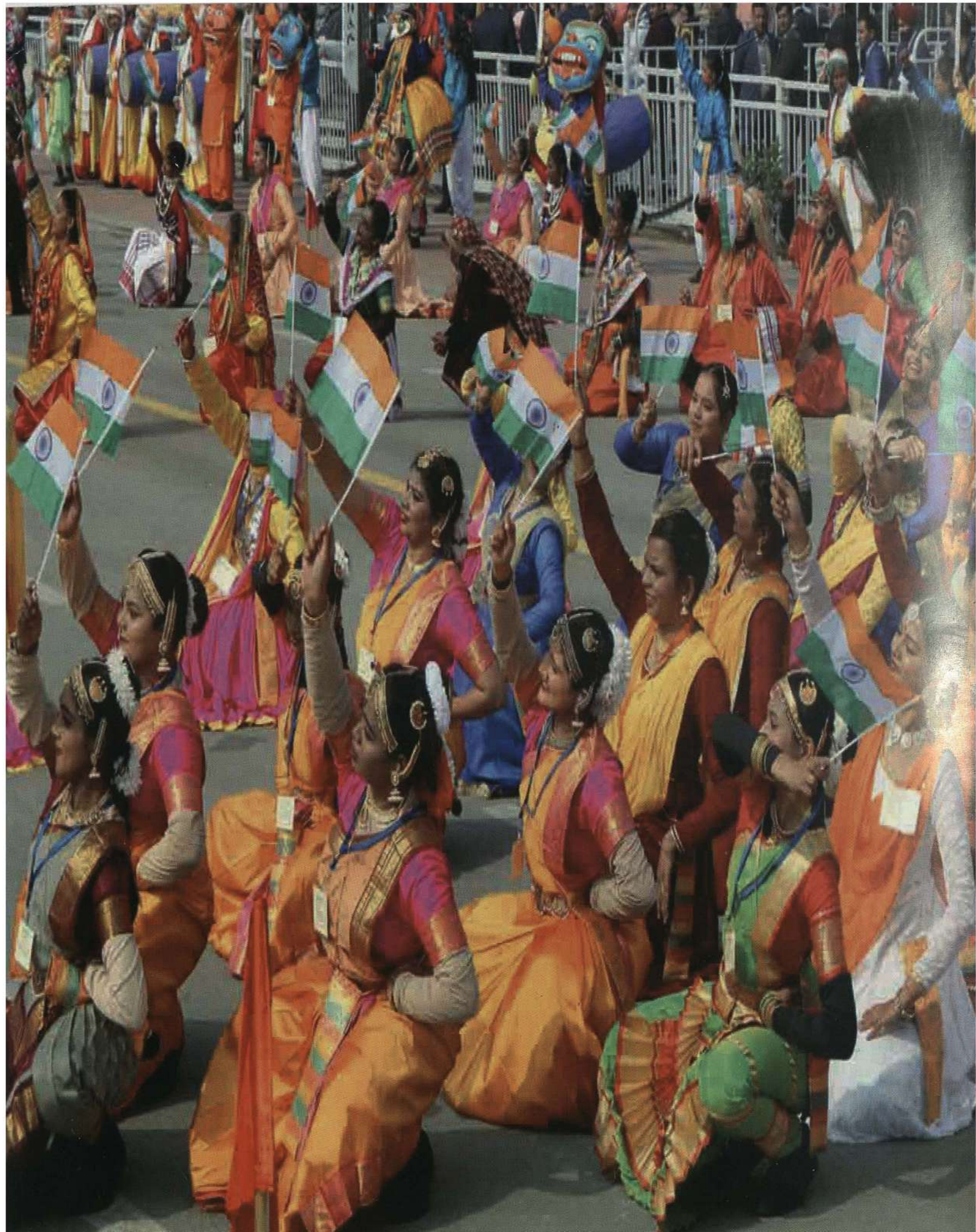


75 वीं गणतंत्र दिवस परेड

75th REPUBLIC DAY PARADE



26 जनवरी, 2024 (6 माघ, 1945)
26 January, 2024 (6 Magha, 1945)



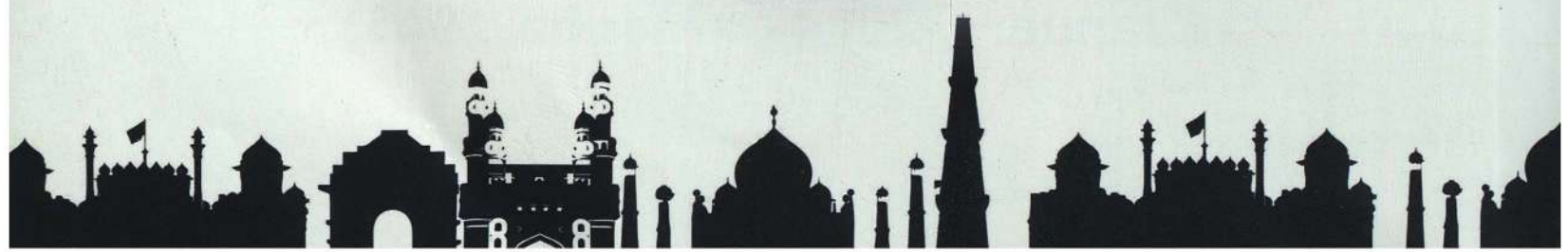


सत्यमेव जयते

75 वीं गणतंत्र दिवस परेड

75th REPUBLIC DAY PARADE

26 जनवरी, 2024 (6 माघ, 1945)
26 January, 2024 (6 Magha, 1945)





फ्रांस का मार्चिंग दस्ता

फ्रांसीसी सेना का संगीत - म्यूसिक डे ला लीजियो एत्रोंज़ेर (एम एल ई)

कुल: 60 पुरुष / गणतंत्र दिवस 2024 पैरेड में प्रतिभागिता: 30 पुरुष

वर्ष 1841 में सृजित, फोरेन लीजन का यह संगीत (मिलिटरी बैंड) फ्रांस और साथ ही साथ विदेशों में भी अपना प्रभाव डालने में योगदान करता है। फोरेन लीजन का यह संगीत एकाधिक कारणों से अनूठा है। प्रथम, इसके संगीतकार लीजियोनिअर पाँच महादेशों से आते हैं और अक्सर विश्व के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कंजरवेटोरिज (संरक्षकालयों) से आते हैं। इसके साथ ही, इसके प्रदर्शनों की सूची सारग्राही है, जिसमें पारंपरिक मार्च और इरोम ओपेरा की ध्वनियाँ शामिल हैं। अंत में, यह बैंड फाडप्स और चीनी टोप, वाद्ययंत्रों का उपयोग करता है जो मध्ययुगीन काल के हैं।

फोरेन लीजन का यह संगीत एक वर्ष में लगभग 70 सेवाओं में भाग लेता है – जिनमें लगभग पंद्रह संगीत कार्यक्रम शामिल होते हैं – फोरेन लीजन और आर्मी के आउटरीच के हिस्से के रूप में फ्रांस के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सेना – राष्ट्र लिंक को मजबूत करता है। प्रत्येक वर्ष यह पेरिस में बैस्टिल डे पैरेड में भाग लेता है।

फोरेन लीजन के संगीतकार होने से पहले इस ऑर्केस्ट्रा के सदस्यगण प्रथमतः सैनिक हैं जिनकी सैन्य आपरेशन में शामिल होने की संभावना रहती है। फ्रांस के दक्षिण में, कैस्टेलनॉडी में चौथी विदेशी रेजिमेंट में प्रशिक्षित, वे नियमित रूप से फ्रांसीसी भू-भाग में आतंकवाद के विरुद्ध सेंटिनल संक्रियाओं में भाग लेते हैं।

द्वितीय विदेशी इन्फैंट्री रेजिमेंट - 2ई रेजिमेंट एत्रोंज़ेर डे इन्फैंट्री

कुल: 1166 पुरुष / गणतंत्र दिवस 2024 पैरेड में प्रतिभागिता: 90 पुरुष

वर्ष 1841 में सृजित और तब से फ्रांसीसी सेना द्वारा संचालित सभी प्रमुख अभियानों में शामिल, द्वितीय विदेशी इन्फैंट्री रेजिमेंट ने वर्ष 1903 में मोरक्को में ईआई-मौंगर की लड़ाई के दौरान स्वयं को उल्लेखनीय रूप से प्रतिष्ठित किया,

FRANCE'S MARCHING CONTINGENT

Music of the French Foreign Legion - Musique de la Légion étrangère (MLE)

Total: 60 men / Participating in Republic Day Parade: 30 men

Created in 1841, the Music (Military Band) of the Foreign Legion contributes to its influence in France as well as abroad. The Music of the Foreign Legion is unique for more than one reason. First, its musician legionnaires come from the five continents and often from the most prestigious conservatories on the planet. Also, its repertoire is eclectic, mixing traditional marches and sounds from the opera. Finally, the band uses fifes and Chinese hats, instruments that date back to the medieval era.

The Music of the Foreign Legion participates in nearly 70 services a year - including about fifteen concerts - as part of the outreach of the Foreign Legion and of the Army, bolstering the Army-Nation link, in France as well as internationally. Every year, it participates in the Bastille Day Parade in Paris.

Before being musicians, the members of the orchestra of the Foreign Legion are – first and foremost – soldiers likely to be engaged in operations. Trained at the 4th Foreign Regiment in Castelnaudary, in the South of France, they regularly participate in the SENTINELLE operation against terrorism on the French territory.

2nd Foreign Infantry Regiment - 2e Régiment étranger d'infanterie

Total: 1166 men / Participating in Republic Day Parade: 90 men

Created in 1841 and engaged in all major operations carried out by the French Army since then, the 2nd Foreign Infantry Regiment distinguished itself notably during the 1903 battle of

जहाँ 113 लीजियनेयर्स ने 1000 से अधिक बेरबेरों को थाम रखा था। इसके बाद, दूसरा आर ई आई इंडोचीन और अल्जीरिया में कई मोर्चों पर लड़ रहा था। अभी हाल ही में, यह खाड़ी युद्ध के दौरान युद्ध पर गया था, फिर न सिर्फ अफ्रीका और मध्य पूर्व में हाल के अभियानों में भाग लिया, अपितु एस्टोनिया और लेबनान में भी भाग लिया।

द्वितीय विदेशी इंफैंट्री रेजिमेंट में वर्ष 2021 के अंत से वर्ष 2022 की शुरुआत तक फ्रांसीसी सेना की भूमि सेना के स्कॉर्पियन कार्यक्रम का हिस्सा है। यह बख्तरबंद मल्टीरोल वाहन ग्रिफॉन से सुसज्जित है, जिसने वर्ष 2022 में पैदल सेना से लड़ने वाले बख्तरबंद वाहन (वीबीसीआई) की जगह ले ली है, और स्कॉर्पियन युद्ध सूचना प्रणाली (एससीआई-एस) पर स्विच हुआ है।

उतारे गयी पैदल सेना के सैनिकों (इंफैंट्री) के पास हथियार एचके 416 - ग्लॉक 17, सटीक राइफल एससीएआर एच पीआर और मशीन गन एमआईएनआईएमआई और एमएजी 58 का दोहरा आवंटन है। यह रेजिमेंट नई पीढ़ी की मध्यम दूरी (एमएमपी) एंटी टैंक मिसाइल को अपने कब्जे में लेने वाली पहली रेजिमेंट में से एक है। कंपनियां इआरवायएक्स मिसाइलों, एटी4सीएस और 81 मिमी मोर्टार से भी लैस हैं। रेजिमेंट की सहायता कंपनी में डिसेम्बावर्ड एंजोमेंट सपोर्ट सेक्शन (एसएईडी), डायरेक्ट सपोर्ट प्लाटून (एसएडी) के हाल ही में साहेल में फाल्को 4 कमांडिंग ग्रुप, शार्पशूटर्स प्लाटून (एसटीई) और अंत में बनायी गयी पैदल सेना (एसआरआरआई) के रोबोटिक्स और इंटेलिजेंस प्लाटून शामिल हैं।

एयरबेस 104 से दो राफेल लड़ाकू विमान

1 सितंबर, 2008 को सृजित एयर बेस 104 "अल धाफ्रा" संयुक्त अरब अमीरात में अबू धाबी में स्थित है। प्रारंभ में मिराज एम 2000-5 से सुसज्जित फ्रांसीसी वायु और अंतरिक्ष बल ने वर्ष 2010 में राफेल विमान को इस बेस पर तैनात किया था। अब वे 1/7 लड़ाकू स्क्वाड्रन "प्रोवेस" के कलर रखते हैं, जो जिसकी उत्पत्ति प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान होने का पता चलता है, और यह वर्ष 2006 की शुरुआत में जगुआर के स्थान पर राफेल प्राप्त करने वाला पहला यूनिट था। फ्रांसीसी राफेल नियमित आधार पर भारतीय लड़ाकू विमानों के साथ प्रशिक्षण उड़ानें आयोजित करता है, उदाहरण के लिए गरुड अभ्यास के दौरान जो प्रत्येक दो वर्षों में भारत में आयोजित किया जाता है।

फ्रांस में इस्ट्रेस एयर बेस 125 से एक ए330 एमआरटीटी फिनिक्स टैंकर विमान

वर्ष 2014 में शुरू किया गया फ्रांसीसी एमआरटीटी (मल्टीरोल ट्रांसपोर्ट टैंकर) प्रोग्राम एयरबेस ए330 - 200 प्रकार के प्लेटफॉर्म के आधार पर डिजाइन किया गया है। अधिक सटीक रूप से कहें तो यह ए330 एमआरटीटी उन्नत संस्करण है जिसमें फ्रांसीसी वायु और अंतरिक्ष बल की विशिष्ट आवश्यकताओं को जोड़ा गया है। एक साथ दो लड़ाकू विमानों या ई-3एफ एक निगरानी विमान में ईंधन भरने में सक्षम, फीनिक्स विमान के सभी विंगों में 110 टन तक ईंधन समाहित होता है। इसका मुख्य मिशन न्यूक्लियर डिटरेंस बल के हवाई घटक को फिर से ईंधन की आपूर्ति करना है। यह यात्रियों और माल ढुलाई क्षमता की बढौलत रणनीतिक परिवहन क्षमताओं को बढाना भी संभव बनाता है। पैरेड के लिए तैनात यह वायुयान 31वें स्ट्रेटेजिक सप्लाय एंड ट्रांसपोर्ट का है।

El-Moungar in Morocco, where over the course of which 113 legionnaires resisted more than 1000 Berbers. Subsequently, the 2nd REI was engaged on numerous fronts, in Indochina and Algeria. More recently, it was engaged during the Gulf War, then took part in recent operations in Africa and Middle East, but also in missions in Estonia and Lebanon.

The 2nd Foreign Infantry Regiment is part of the SCORPION program of the French Army's land forces since late 2021 - early 2022. It is equipped with the multirole armoured vehicle Griffon, which has replaced the infantry fighting armoured vehicle (VBCI) in 2022, and has switched to the SCORPION combat information system (SCI-S).

The disembarked infantry legionnaires have a double allotment of weaponry HK 416 - Glock 17, precision rifles SCAR H PR and machine guns MINIMI and MAG58. The regiment is one of the very first to take possession of the medium-range (MMP) anti-tank missile of the new generation. The companies are also equipped with ERYX missiles, AT4 CS, and 81 mm mortars. The support company of the regiment is composed of the disembarked engagement support section (SAED), recently projected on the mandate of the Falco IV commanding group in the Sahel, of the direct support platoon (SAD), of the sharpshooters' platoon (STE), and of the robotics and intelligence platoon of the infantry (SRRI) created at the end of 2022.

Two Rafale fighter jets from air base 104

Created on September 1, 2008, Air Base 104 "Al Dhafra" is located in Abu Dhabi, in the United Arab Emirates. Initially equipped with Mirage M2000-5, the French Air and Space Force deployed Rafale aircraft to this base in 2010. They now wear the colours of the 1/7 fighter squadron "Provence", which traces its origin back to World Wars I and II, and was the first unit to get the Rafale in early 2006, as a replacement for the Jaguar. French Rafale conduct training flights with Indian fighter jets on a regular basis, and for instance during the Garuda exercise which takes place in India every 2 years.

One A330 MRTT Phoenix tanker aircraft from Istres Air Base 125 in France

Launched in 2014, the French MRTT (MultiRole Transport Tanker) program is designed on the basis of an Airbus A330-200 type platform. More precisely, it's the A330 MRTT Enhanced version to which the specific needs of the French Air and Space Force are added. Capable of refuelling two fighters simultaneously or an E-3F surveillance aircraft, the Phoenix carries up to 110 tonnes of fuel distributed across the wing of the aircraft. Its main mission is to resupply the airborne component of the nuclear deterrence force. It also makes it possible to increase strategic transport capacities thanks to its passenger and freight carrying capacity. The aircraft deployed for the parade comes from the 31st Strategic Supply and Transport.

कार्यक्रम

1027 बजे राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि, फ्रांस के राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान के साथ आगमन।

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि की अगवानी।

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, चीफ आफ डिफेंस स्टाफ, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।

राष्ट्रपति, मुख्य अतिथि तथा प्रधान मंत्री का मंच की ओर प्रस्थान।

राष्ट्र ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है।

सांस्कृतिक झाँकी

मोटर साइकिल करतब

विमानों द्वारा सलामी।

राष्ट्रीय सलामी।

राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि का राजकीय सम्मान के साथ प्रस्थान।

PROGRAMME

1027 hrs The President and the Chief Guest, the President of France arrive in State.

The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, Chief of Defence Staff, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

The President, the Chief Guest and the Prime Minister proceed to the rostrum.

The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant.

Motor Cycle Display.

Fly-past.

National Salute.

The President and the Chief Guest depart in State.

परेड क्रम

वाद्ययंत्रों से उद्घोषणा

हेलीकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा
परेड कमांडर
परेड सेकंड-इन-कमांड
परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता
फ्रांस का मार्चिंग और बैंड दस्ता
(मुख्य अतिथि के देश) - फ्रांस के 03 विमानों का फ्लाई पास्ट

सेना

सवार दस्ते

61 कैवलरी

मैकेनाइज्ड दस्ते

टी-90 टैंक

नाग मिसाइल सिस्टम (एनएएमआईएस)

बीएमपी-II/IIके

आल टैरेन व्हिकल

लाइट स्पेशलिस्ट व्हिकल एण्ड व्हिकल माउंटेड इन्फैन्ट्री

मोरटार सिस्टम

स्पेशलिस्ट मोबिलिटी व्हिकल

क्विक रिएक्शन फोर्स व्हिकल (हेवी) एण्ड क्विक रिएक्शन

फोर्स व्हिकल (मीडियम)

पिनाका एण्ड वेपन लोकेटिंग रडार स्वाती

ड्रोन जैमर एण्ड एडवांस्ड रेडियो फ्रीक्वेंसी

मोनिटीरिंग सिस्टम

सर्वत्र मोबाइल ब्रिजिंग सिस्टम

मीडियम रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल सिस्टम (एमआरएसएएम)

मल्टीफंक्शन रडार (एमएफआरडीआर)

एडवांस्ड लाइट हेलिकॉप्टर (वेपन सिस्टम इन्टीग्रेटेड)

एण्ड लाइट कॉम्बैट हेलिकॉप्टर

मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ियां

मद्रास रेजिमेंट की सैन्य टुकड़ी

जीएआरएच राइफल्स रेजिमेंट सेंटर

58 जीटीसी

: बैंड की ध्वनि

39 जीटीसी

"कदम कदम बढ़ाए जा"

ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट सैन्य टुकड़ी

राजपूताना राइफल्स रेजिमेंट सैन्य टुकड़ी (राज राइफल्स)

THE ORDER OF MARCH

Heralding with Musical Instruments

Showering of flower petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

Marching Contingent and Band from France

(Country of Chief Guest) - Fly-past by 03 Aircraft's of France

ARMY

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanized Columns

T-90 Tank

Nag Missile System (NAMIS)

BMP-II/IIK

All Terrain Vehicle

Light Specialist Vehicles & Vehicle Mounted Infantry
Mortar System

Specialist Mobility Vehicles

Quick Reaction Force Vehicles (Heavy) & Quick Reaction
Force Vehicles (Medium)

PINAKA and Weapon Locating Radar SWATI

Drone Jammer and Advanced Radio Frequency Monitoring
System

SARVATRA Mobile Bridging System

Medium Range Surface to Air Missile System(MRSAM)

Multi Function Radar (MFRDR)

Advanced Light Helicopter (Weapon System Integrated)
and Light Combat Helicopter

Marching Contingents

Madras Regiment Contingent

GARH Rif Regimental Centre

58 GTC

: Band playing

39 GTC

"Kadam Kadam Baday Ja"

Grenadiers Regiment Contingent

Rajputana Rifles Regiment Contingent (RAJ RIF)

जेएके एल आई रेजिमेंटल सेंटर
1 सिग्नल ट्रेनिंग सेंटर (एस टी सी)
आर्टिलरी सेंटर, हैदराबाद

: बैंड की ध्वनि
"श्रेष्ठ भारत"

तीनों सेनाओं की महिला सैन्य टुकड़ी
सिख रेजिमेंट सैन्य टुकड़ी

एएडी कॉलेज एंड सेंटर
डोगरा रेजिमेंटल सेंटर
एएससी सेंटर (उत्तर)

: बैंड की ध्वनि
"सारे जहां से अच्छा"

कुमाऊं और नागा रेजिमेंट सैन्य टुकड़ी
बीईजी (किरकी) सैन्य टुकड़ी

मराठा एल आई रेजिमेंटल सेंटर
जाट रेजिमेंटल सेंटर
एओसी सेंटर

: बैंड की ध्वनि
"ध्रुव"

तीनों सेनाओं की महिलाओं की सैन्य टुकड़ी (एएफएमएस)

JAK LI Regimental Centre
1 Signal Training Centre(STC)
Arty Centre, Hyderabad

: Band playing
"Shrestha Bharat"

All Women Tri-Services Contingent
Sikh Regiment Contingent

AAD College & Centre
DOGRA Regimental Centre
ASC Centre (North)

: Band playing
"Sare Jahan Se Acha"

Kumaon & Naga Regiment Contingent
BEG (Kirkee) Contingent

MARATHA Li Regimental Centre
JAT Regimental Centre
AOC Centre

: Band playing
"Dhruv"

All Women Tri-Services Contingent (AFMS)

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड
नौसेना की मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ी
झांकी

वेटरनों की झांकी

वायु सेना

वायु सेना बैंड
वायु सेना की मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ी
झांकी

03 X मिग-29 एसी द्वारा फ्लाईपास्ट "विक" फोरमेशन में भारतीय वायु सेना की मार्च करती हुई टुकड़ी के साथ फ्लाई पास्ट ।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

सभी 05 आयामों (भूमि, वायु, समुद्र साइबर और अंतरिक्ष) में रक्षा शील्ड उपलब्ध कराकर राष्ट्र की सुरक्षा में महिलाशक्ति संबंधी थीम पर झांकी

NAVY

Navy Brass Band
Navy Marching Contingent
Tableau

Veterans Tableau

AIR FORCE

Air Force Band
Air Force Marching Contingent
Tableau

Fly-past by 03 x MiG-29 ac in 'Vic'
Formation along with IAF marching contingent.

DEFENCE RESEARCH AND DEVELOPMENT ORGANISATION

Tableau on the theme "Women power in protecting the nation by providing the defence shield in all 05 dimension (Land, Air, Sea, Cyber & Space)"

सीपीएफ और अन्य सहायक फोर्स

बैंड: भारतीय तटरक्षक बल

भारतीय तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : बीएसएफ

बीएसएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: सीआईएसएफ

सीआईएसएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : सीआरपीएफ

सीआरपीएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: आईटीबीपी

आईटीबीपी की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : एसएसबी

एसएसबी की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: दिल्ली पुलिस

दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

सीमा सुरक्षा बल के ऊंटों की टुकड़ी

बैंड: बीएसएफ कैमिल

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी)

गर्ल मार्चिंग सैन्य टुकड़ी (आर्मी)

एनसीसी गर्ल बैंड

गर्ल मार्चिंग सैन्य टुकड़ी (तीनों सेनाएं)

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस)

राष्ट्रीय सेवा योजना मार्चिंग टुकड़ी

भारतीय सेना का 08 x पाइप एंड ड्रम बैंड – बैंड ध्वनि

"देशों का सरताज भारत"

खुली जीप में प्रधान मंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार विजेता

CAPFs AND OTHER AUXILIARY FORCES

Band: Indian Coast Guard

Indian Coast Guard Marching Contingent

Band: BSF

BSF Marching Contingent

Band: CISF

CISF Marching Contingent

Band: CRPF

CRPF Marching Contingent

Band: ITBP

ITBP Marching Contingent

Band: SSB

SSB Marching Contingent

Band: Delhi Police

Delhi Police Marching Contingent

BSF Camel Contingent

Band: BSF Camel

NATIONAL CADET CORPS (NCC)

Girl Marching Contingent (Army)

NCC's Girl Bands

Girls Marching Contingent (Tri-Services)

NATIONAL SERVICE SCHEME (NSS)

Nation Service Scheme Marching Contingent

08 x Pipes & Drums Band of : Band Playing

Indian Army

"Deshon Ka Sartaj Bharat"

Pradhan Mantri Rashtriya Bal Puraskar Vijeta in
open Gypsies

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झांकी - 26 (छब्बीस)

सांस्कृतिक कार्यक्रम

"वंदे भारतम" प्रतियोगिता के जरिए चयनित कलाकारों के समूह द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां।

मोटर साइकिल करतब: सीआरपीएफ, एसएसबी और बीएसएफ की संयुक्त महिला टीम द्वारा

भारतीय वायु सेना द्वारा फलाई पास्ट (मौसम अनुकूल रहने पर)

प्रचंड फोरमेशन : उक्त फोरमेशन एक एलसीएच विमान दो अपाचे हेलीकाप्टरों और दो एलएचएमके-IV विमानों के साथ सोपान में आगे बढ़ते हुए पांचों विमानों के साथ "तीर" के रूप में होगी।

तांगैल फोरमेशन : इस फोरमेशन में एक डकोटा विमान सबसे आगे दो डोर्नियर विमानों के सोपानकों के साथ राजपथ के "विक" फोरमेशन में उड़ान करेंगे।

अर्जन फोरमेशन : इस फोरमेशन में एक सी - 295 विमान दो सी-130 विमान के साथ "विक" की फोरमेशन में उड़ान भरेंगे।

नेत्र फोरमेशन : इस फोरमेशन में 01 x एईडब्ल्यू एंड सी विमान और 02 x एसयू - 30 विमान सोपान में "विक" की फोरमेशन बनाते हुए उड़ेंगे।

वरुण फोरमेशन : इस फोरमेशन में 1 x पी - 8 आई और 2 x एसयू - 30 विमान सोपान में 'विक' फोरमेशन बनाते हुए उड़ेंगे।

भीम फोरमेशन : इस फोरमेशन में 01x सी - 17, 02xएसयू - 30 विमान के साथ सोपान में (धुआं छोड़ते हुए) और "विक" फोरमेशन बनाते हुए उड़ेंगे।

तेजस फोरमेशन : इसमें 04 x तेजस विमान से निर्मित यह फोरमेशन 'डायमंड' फोरमेशन में उड़ेंगी।

अमृत फोरमेशन : 06xजगुआर विमान से निर्मित यह फोरमेशन 'ऐरो-हेड' की फोरमेशन बनाते हुए कर्तव्य पथ के उत्तर में वाटर चैनल के ऊपर फ्लाई करेंगे।

THE CULTURAL PAGEANT

Tableaux - 26 (Twenty Six)

CULTURAL PERFORMANCES

Cultural Performance by group of artists selected through "Vande Bharatam" competition.

Motor Cycle Display: By combined Women team of CRPF, SSB and BSF.

FLY-PAST by IAF

[If weather conditions permit]

Prachand Formation : The formation comprising one LCH ac in lead with two Apache Helicopters and two ALH Mk-IV ac in echelon would fly in five ac "Arrow" formation.

Tangail Formation : The formation comprising one Dakota ac in lead with two Dornier ac in echelon would fly in 'Vic' Formation.

Arjan Formation : The formation comprising one C-295 ac in lead with two C-130 ac in echelon would fly in 'Vic' Formation.

Netra Formation : The formation comprising 01 x AEW&C ac and 02xSu-30 ac in echelon would fly in 'Vic' formation.

Varuna Formation : The formation comprising 1 x P-8i ac and 2 x Su-30 ac in echelon would fly in 'Vic' Formation.

Bheem Formation : The formation comprising 01 x C-17 and 02 x Su-30 ac in echelon (streaming fuel) would fly- past in 'Vic' formation.

Tejas Formation : The formation comprising 04 x Tejas ac would fly-past in 'Diamond' formation.

Amrit Formation : The formation comprising 06 x Jaguar ac will fly-past over the water channel North of Kartavya Path in 'Arrow-head' formation.

12

वज्रांग फोरमेशन : इस फोरमेशन में 06 x राफेल विमान "इन्वर्टिड वाइनग्लास" फोरमेशन में उड़ान भरेंगे ।

त्रिशूल फोरमेशन : 03 x एसयू - 30 विमान से निर्मित यह फोरमेशन 'विक' फोरमेशन में उड़ान भरेंगे । मंच के पास पहुंचकर यह फोरमेशन खिंच जाएगी और त्रिशूल युक्ति चालन के लिए बाहर की ओर जाएगी ।

विजय फोरमेशन : कर्तव्य पथ के उत्तर में वाटर चैनल के ऊपर त्रिशूल फोरमेशन के पीछे 900 कि.मी. प्रति घण्टा की गति से एक राफेल विमान उड़ेगा । मंच की ओर बढ़ते हुए यह विमान 'वर्टिकल चार्ली' की ओर बढ़ेगा और कई घुमाव लेगा ।

गुब्बारों को छोड़ा जाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ।

Vajraang Formation : The formation comprising of 06 x Rafale ac will fly in 'Inverted Wineglass' Formation.

Trishul Formation : The formation comprising 03 x Su-30 ac will fly in 'Vic' Formation. Approaching the Dais, the formation will pull up and outwards for Trishul Manoeuvre.

Vijay Formation : One Rafale ac would be flying in at 900kmph behind Trishul formation over water channel North of Kartavya Path. Approaching the dais, the aircraft will pull up for 'Vertical Charlie' and carry out multiple turns.

Release of balloons: India Meteorological Department

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 75वीं गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत का प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग-बिरंगी झाँकियों में भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी पहलुओं का चित्रण है। इन झाँकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु-शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating its 75th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisations, cultural diversity and progress symbolising India's glorious past and reflects the citizens aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.

बुगुन सामुदायिक रिजर्व

बुगुन सामुदायिक रिजर्व शीर्षक 'विकसित भारत' थीम के अंतर्गत आता है। उक्त झांकी सिंगचुंग बुगुन विलेज कम्युनिटी रिजर्व (एसबीवीसीआर) के बारे में है जो अरुणाचलप्रदेश में एक 17 वर्ग किलोमीटर में फैला जैव विविधता प्रमुख स्थल है। इसे इस क्षेत्र में जैव-विविधता की सुरक्षा करने, परंपरागत तथा सांस्कृतिक मूल्यों और पद्धतियों के संरक्षण के मुख्य उद्देश्य से वर्ष 2017 में बनाया गया था।

यह पासेराइन बर्ड बुगुन लियोसिल्ला (लियोसिल्ला बुगुनोरम) जैसी अतिसंकटापन्न प्रजातियों का आश्रय स्थल है जिसका नाम बुगुन जनजाति के नाम पर रखा गया है। यह संकटापन्न प्रजातियों जैसे रेड पांडा (ऐलरस फुल्जेस) और जीव जंतुओं और वनस्पतियों की बहुत सारी किस्मों का भी आश्रय-स्थल है। वाणिज्यिक लागिंग और पहले बड़े स्तर पर औषधीय पादप प्रजातियों को हटाया जा रहा था। एसबीवीसीआर की संकल्पना से ही रिजर्व की प्रबंधन समिति ने शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया है, अतः वन के संरक्षण का काम शुरू किया गया है। 10 प्रशिक्षित स्वयंसेवकों की एक टोली नियमित रूप से एसबीवीसीआर की निगरानी करती है। एसबीवीसीआर, जंगल में प्रजातियों का संरक्षण श्रेणी के अन्तर्गत वर्ष 2018 के जैव विविधता पुरस्कार का विजेता भी है। ये साहसी खेल-कूदों और वन्यजीवों से संबंधित अन्य कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं और इस कार्यक्रम का हालमार्क पर्यटन के माध्यम से कम परिस्थितिकीय प्रभाव से अधिक आमदनी करना है।

झांकी के अग्र भाग में बुगुन लियोसिल्ला बर्ड की एक नई प्रजाति और प्राकृतिक वनस्पति में रिजर्व के अन्य पक्षियों को दर्शाया गया है। बुगुन लोक नृत्य को संक्षिप्त रूप में दर्शाया गया है और झांकी के पिछले हिस्से में घूमने आए पर्यटकों और साहसी खेल-कूदों को दिखाया गया है।

- अरुणाचल प्रदेश

Bugun Community Reserve

The title 'Bugun Community Reserve' falls under the theme 'Viksit Bharat'. The tableau is about the Singchung Bugun Village Community Reserve (SBVCR) which is a 17 square kilometre biodiversity hotspot in Arunachal Pradesh. It was created in 2017 to protect bio-diversity in the region for traditional and cultural conservation values and practices.

It is home to critically endangered species such as the passerine bird Bugun Liocichla (Liocichla bugunorum) which is named after the tribe. It is also home to endangered species such as red panda (Ailurus fulgens) and many other varieties of flora and fauna. There was commercial logging and large-scale removal of medicinal species. Since conception of SBVCR, the reserve's management committee has banned hunting and taken up conservation of forest. A batch of ten trained volunteers are regularly keeping vigil of SBVCR. SBVCR is also a Winner of India Biodiversity Awards under the category, 'Conservation of Species in Wild', in 2018. They conduct adventure sports and other programmes related to wildlife and the hallmark of this program is high income from tourism with low ecological impact.

In the front portion, the new species of bird called Bugun Liocichla and other birds from the reserve in natural vegetation is depicted. The rear portion is led by the Bugun folk dance, visiting tourists and adventure sports is depicted in the rear portion.

- ARUNACHAL PRADESH





मेरा परिवार – मेरी पहचान

मेरा परिवार – मेरी पहचान' हरियाणा सरकार का एक महत्वकांक्षी कार्यक्रम है जो 'विकसित भारत' के सपने को साकार करने में सार्थक भूमिका निभा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सरकार द्वारा संग्रहित व अद्यतन प्रत्येक परिवार की सूचना को तकनीक से जोड़कर पात्र परिवारों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। परिवार पहचान पत्र के माध्यम से अब सरकार प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक अपनी योजनाओं को पहुंचा रही है। इस वर्ष हरियाणा राज्य की झांकी की थीम भी 'मेरा परिवार-मेरी पहचान' रखी गयी है।

इस झांकी में लैपटॉप पर कार्य करती हरियाणवी महिला को पारंपरिक रूप में प्रदर्शित किया गया है, जो परिवार पहचान पत्र के माध्यम से शिक्षा छात्रवृत्ति प्राप्त कर स्वयं को सशक्त बनाने वाली महिलाओं की प्रतीक हैं। उसके पास एक डिजिटल उपकरण है जो एक विकसित डिजिटल भारत का प्रतीक है जो हरियाणा के प्रत्येक कोने से परिवार पहचानपत्र के माध्यम से अपने घरों से बड़े आराम से सिर्फ एक आसान क्लिक से सरकारी योजनाओं तक पहुंचा जा सकता है और लाभ उठाया जा सकता है। महिला को गेहू की फसल के आसपास बैठी हुई प्रदर्शित किया गया है, जो भारत के उत्तरी राज्य हरियाणा में 12 मिलियन मीट्रिक टन गेहू के उत्पादन को प्रदर्शित करता है।

झांकी के पिछले भाग में, फोन के माध्यम से परिवार पहचान पत्र के महत्वपूर्ण लाभों जैसे कि राशन की निर्बाध खरीद, किसान परिवारों के लिए कृषि सब्सिडी, युवा छात्रों के लिए छात्रवृत्ति और बुजुर्गों के लिए पेंशन आदि पर प्रकाश डाला गया है। यह कार्ड विकसित भारत के प्रमुख हितधारकों जैसे – महिलाएं, बुजुर्ग, किसान और युवा तक योजनाओं की पहुंच प्रदान करता है जिनको प्रदर्शित करना इसका उद्देश्य है।

- हरियाणा

Mera Parivar – Meri Pehchan

'Mera Parivar-Meri Pehchan' is an ambitious programme of the Haryana Government which is playing a meaningful role in realizing the dream of 'Viksit Bharat' (Developed India). The main objective of this program is to provide the benefits of government schemes to the eligible families by connecting with technology through the data of every family collected and updated by the government. Now the government itself is delivering the schemes to every eligible person through the Parivar Pehchan Patra. This year the theme of Haryana state tableau has also been kept as 'Mera Parivar-Meri Pehchan'.

The Tableau has been crafted as a traditional symbol of empowerment for a Haryanvi women on her laptop who has received her education scholarship through the Parivar Pehchan Patra. She holds a digital device that symbolizes a developed digital India, enabling people across every corner of Haryana to access and redeem government schemes with just one easy click from the comfort of their homes through the Parivar Pehchan Patra. The woman is seated around the wheat plantation depicting 12 million metric tons of wheat was produced in the northern state of Haryana in India.

In the rear section of the tableau, significant benefits have been highlighted of the Parivar Pehchan Patra through a phone such as the seamless procurement of ration, agricultural subsidies for farmer families, scholarships for young students, and pensions for the elderly. This card provides access to the key stakeholders of Viksit Bharat that it aim to represent: women, the elderly, farmers, and youth.

- HARYANA

थम्बालगी लंग्ला - कमल के धागे

मणिपुरी की झांकी के अग्रभाग में, एक महिला लोकटाक झील से कमल की डंडियाँ एकत्र करती हुई दिखाई दे रही है। झांकी के किनारों पर, नावों पर सवार और कमल की डंडियाँ एकत्र करती हुई महिलाओं को दर्शाया गया है। झांकी में, महिलाएं कमल के तने से नाजुक रेशे निकालती और चरखों का उपयोग करके सूत बनाती हुई दिखाई दे रही हैं। केंद्र में, एक महिला पारंपरिक मणिपुरी करघे "इयोंग" का उपयोग करके कपड़े बुन रही है। झांकी के पीछे की ओर, इमा कैईथेल की प्रतिकृति है। इमा कैईथेल, अर्थात् "माताओं का बाजार", दुनिया का पांच सदी पुराना एकमात्र ऐसा बाजार है जो पूरी तरह से महिलाओं द्वारा चलाया जाता है। झांकी में, महिलाओं को बुने हुए कपड़े इमा कैईथेल ले जाते हुए दिखाया गया है जिसमें सामाजिक-आर्थिक क्रियाकलापों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका का चित्रण है। इमा कैईथेल आर्थिक विकास को सशक्त बनाती नारी शक्ति का उदाहरण है। झांकी के दोनों ओर मणिपुरी महिलाओं द्वारा निर्मित कुछ लोकप्रिय कपड़ों से सजाया गया है, जिनमें दो जीआई टैग वाले कपड़े भी शामिल हैं।

यह दृश्य भारत की पहली कमल रेशम निर्माता बिजय शांति टोंगब्रम द्वारा नवप्रवर्तित कमल रेशम बनाने की प्रक्रिया को दर्शाता है। उन्होंने स्थानीय महिलाओं को रोजगार प्रदान करने के अलावा भारत को कमल रेशम निर्यातकों में दुनिया के केवल चार देशों की सूची में भारत को शामिल करके देश का नाम रोशन किया। हाल ही में, मणिपुर के जिलों और गांवों में कई इमा कैईथेलों का का उद्घाटन किया गया है, जिससे स्थानीय महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

इमा कैईथेल स्थानीय महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं और विजयशांति के नवाचार और उद्यमशीलता "वोकल फ़ॉर लोकल, लोकल फ़ॉर ग्लोबल" के सच्चे उदाहरण हैं। वास्तव में, मणिपुर आर्थिक विकास के लिए स्थानीय महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक आदर्शरूप पेश करता है जो भारत को विकसित भारत बनाने में मदद करेगा।

- मणिपुर

Thambalgi Langla - Lotus Threads

The front of the tableau features a woman collecting lotus stems from Loktak lake of Manipur. Women riding on boats and collecting lotus stems are displayed on the sides of the tableau. On the tableau, women are seen extracting delicate fibers from the lotus stems, and making yarns using traditional Charkhas. In the center, a woman is weaving clothes using "Eyong" - a traditional Manipuri loom. The building on the end of the tableau is a replica of Ima Keithel. Ima Keithel meaning mother's market is the only five-century old market run entirely by women. The tableau shows women taking newly woven clothes to Ima Keithel depicting women's crucial roles in socio-economic activities. Ima Keithel is an epitome of Nari Shakti powering economic growth. The sides of tableau's end are decorated with some of the popular fabrics of Manipur innovated by Manipuri women including two GI tagged fabrics.

This scene depicts the process of making lotus silk innovated by Bijayshanti Tongbram, India's first lotus silk maker. She makes the nation proud by including India in the list of world's only four nations of lotus silk exporters. Recently, several Ima Keithels have been inaugurated in districts and villages of Manipur helping local women achieve financial independence.

Ima Keithel helping local women achieve financial independence and Bijayshanti's innovation and entrepreneurship are true examples of "Vocal for Local & Local for Global." Indeed, Manipur provides a replicable model for empowering local women for economic growth that will help India become a "Viksit Bharat".

- MANIPUR





आत्मनिर्भर नारी-विकास का मंत्र

मध्यप्रदेश राज्य की झाँकी आत्मनिर्भर और प्रगतिशील नारी शक्ति पर केन्द्रित है। इस झाँकी में आधुनिक सेवा क्षेत्र से लेकर लघु उद्योग और पारंपरिक क्षेत्र में समान रूप से सक्रिय राज्य की महिलाओं की उन्नति को दर्शाया गया है।

विकास प्रक्रिया में महिलाओं को अपनी कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से सीधे तौर पर जोड़ने में इस राज्य ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। झाँकी में स्व-सहायता समूहों, स्थानीय नेतृत्व और खेत खलिहान से लेकर उड्डयन क्षेत्र में प्रदेश की नारी की प्रगति का प्रदर्शन किया गया है।

अग्रिम भाग में भारतीय वायुसेना की पहली महिला फाइटर पायलट मध्यप्रदेश के रीवा जिले की अवनी चतुर्वेदी लड़ाकू विमान के प्रतिरूप के साथ दिख रही हैं, नीचे गोंड चित्रकारी है। मध्य भाग में मटके पर चित्रकारी करती महिला कलाकार, चंदेरी का बादल महल गेट और विश्व विख्यात चंदेरी, माहेश्वरी, बाघ प्रिंट साड़ियों की बुनकर महिलाएं इन्हें विक्रय हेतु खड़ी हैं। इसके निचले हिस्से में महिला कलाकार द्वारा स्टोन कार्विंग शिल्प एवं गोंड जनजातीय महिला कलाकार पद्मश्री श्रीमती दुर्गा बाई की भित्ति चित्रकारी है। पिछले भाग में बेहतर पोषण युक्त आहार श्री-अन्न (मिलेट्स) उत्पादन के हमारे राष्ट्रीय संकल्प की प्रेरणा देती, भारत के मिलेट मिशन की एम्बेसडर, 'मिलेट वुमन ऑफ़ इंडिया' मध्यप्रदेश के डिंडोरी जिले की सुश्री लहरी बाई की प्रतिकृति है एवं बांस की बनी टोकरियों में विभिन्न प्रकार का श्री अन्न (मोटा अनाज) है। निचले हिस्से में मिलेट्स से निर्मित महिलाओं के भित्ति चित्र हैं। झाँकी के आसपास राज्य के मालवा अंचल का लोक-नृत्य करती महिलाएं दिखाई दे रही हैं।

- मध्य प्रदेश

Self-reliant Woman - Mantra of Vikas

The tableau of Madhya Pradesh highlights self-reliant and progressive women of the State. It showcases the women in the state, progressing equally and actively participating in the areas right from modern service sector to small-scale industries and traditional domains.

The state has achieved notable success in integrating women directly into the development process through its welfare schemes. The tableau illustrates the progressive journey of women in the state, through self-help groups, local leadership and representation even in the aviation sector.

In the front part, Avani Chaturvedi from Rewa District and Madhya Pradesh's first woman fighter pilot in the Indian Air Force, stands beside a fighter plane model, with a Gond painting below the stage. The middle part features women artists painting on pots, the Badal Mahal gate of Chanderi, and weavers of globally renowned Chanderi, Maheshwari, and Bagh print sarees, putting them up for sale. The lower section of the same showcases stone carving crafted by a female artist and a mural painted by Gond tribal artist 'Padma Sri' Smt. Durga Bai. The rear part features India's Millet Mission ambassador and; Millet Woman of India; Ms. Lahari Bai from Dindori district of Madhya Pradesh and bamboo baskets containing various millets. Murals of women made from millets adorn the lower portion. Around the tableau concludes with women from 'Malwa' region performing folk dances are seen, embodying the vibrant culture of the state.

- MADHYA PRADESH

विकसित भारत में महिला सशक्तिकरण

देश के आर्थिक विकास और सामाजिक उत्थान के लिए महिला सशक्तिकरण एक पूर्वपेच्छा है। देश के आर्थिक विकास में महिलाओं के लिए समान अवसरों पर जोर देकर ओडिशा महिला सशक्तिकरण के समर्थक के रूप में उभरा है। झांकी महिला सशक्तिकरण और इसके हस्तशिल्प तथा हथकरघा क्षेत्रों में राज्य की उपलब्धियों को प्रदर्शित करती है और यह महिलाओं को अपनी सामाजिक – आर्थिक स्थिति में सुधार करने और उनकी रचनात्मकता का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

हाथी को ऊर्जा और शक्ति का पावर हाउस माना जाता है। तदुसार दिव्य हाथी “कंदर्प हस्ती” भगवान श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों की भक्ति के समानांतर ओडिशा की महिलाओं के ‘विकसित भारत’ के प्रति समर्पण का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि ‘विकसित भारत’ में, ओडिशा में महिला स्वयं सहायता समूहों की शक्ति हाथी की तरह दुर्जेय है, जिसमें श्रीजगन्नाथ रथ चक्र प्रगति का प्रतीक है।

झांकी के मध्य भाग में लाइव प्रदर्शनों के माध्यम से हस्तशिल्प और हथकरघा क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को दर्शाया गया है। यह न केवल ग्रामीण रोजगार के अवसर पैदा करता है, बल्कि निर्यात और पर्यटन के माध्यम से अर्थव्यवस्था में भी योगदान देता है। यह प्रौद्योगिकी के प्रति महिलाओं के अनुकूलन, नकदी रहित लेनदेन और ई-प्लेटफार्म मार्केटिंग में संलग्न होने की जानकारी देता है। यह बड़ा छत्रक, ‘विकसित भारत’ में कारीगरों के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार के पूरे दिल से समर्थन को दर्शाता है। पिछले हिस्से में रघुराजपुर गांव एक विरासत झोपड़ी की विशेषताएं दर्शाई गई हैं जहां महिलाएं पट्टाचित्र और मुखौटे तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। गांव के एक खुले संग्राहलय में ‘विकसित भारत’ की ओर यात्रा को दर्शाता है। ‘कोणार्क मंदिर का युद्ध घोड़ा’ एक विकसित भारत को आकार देने में ओडिशा की तेजी से प्रगति का प्रतीक है।

- ओडिशा

Women Empowerment in Viksit Bharat

Empowerment of women is a pre-requisite for Nation's economic development and social upliftment. Odisha stands as a fervent advocate for women's empowerment, emphasizing equal opportunities for women as crucial contributors to the nation's economic development. The tableau showcases the state's achievements in women's empowerment and its vibrant handicraft and handloom sector, providing a platform for women to elevate their socio-economic status and showcase creativity.

Elephant is considered as the power house of energy and strength. Accordingly, the divine elephant 'Kandarpa Hasti' symbolizes the dedication of Odisha's women to 'Viksit Bharat', paralleling the devotion of Gopis to Lord Sri Krishna. This signifies that in 'Viksit Bharat', the power of Women SHGs in Odisha is as formidable as an elephant, with the Sri Jagannath Chariot Wheel symbolizing progress.

The central tableau highlights women's involvement in handicrafts and handloom sectors, through live demonstrations. This not only creates rural employment opportunities but also contributes to the economy through exports and tourism. It acknowledges women's adaptation to technology, engaging in cashless transactions and e-platform marketing. The big umbrella denotes the whole heartedly support of Union Government and State Government to the artisans in 'viksit Bharat'. The rear portion features a heritage hut in Raghurajpur village, where women play a pivotal role in crafting Pattachitra and masks. The village's transformation into an open museum signifies the journey towards 'Viksit Bharat'. The 'War Horse of Konark Temple'; symbolizes Odisha's rapid progress in shaping a developed India.

- ODISHA





बस्तर की "आदिम जनसंसद" मुरिया दरबार

छत्तीसगढ़ प्रदेश की झांकी जनजातीय समाज में आदि-काल से उपस्थित लोकतांत्रिक चेतना और परंपराओं को दर्शाती है, जो आजादी के 75 साल बाद भी राज्य के बस्तर संभाग में जीवंत और प्रचलित हैं। यह झांकी भारत में लोकतंत्र के जन्म और उसके विकास की कहानी सप्रमाण प्रस्तुत करती है।

झांकी का अग्र भाग दर्शा रहा है कि बस्तर का जनजातीय समाज स्त्री प्रधान रहा है। अपनी पारंपरिक वेशभूषा में एक स्त्री को अपनी बात रखते हुए दर्शाया गया है। झांकी के मध्य भाग में बस्तर की आदिम जनसंसद को दर्शाया गया है जिसे मुरिया दरबार के नाम से जाना जाता है। मुरिया दरबार की यह परम्परा 600 वर्षों से अधिक पुरानी है और यह विश्व प्रसिद्ध "बस्तर दशहरे" का हिस्सा रही है। लेकिन इसकी शुरुआत के कतिपय प्रमाण आदिम काल के मिलते हैं। झांकी के पिछले भाग में बस्तर की प्राचीन राजधानी बड़े डोंगर में स्थित 'लिमऊ राजा' नाम के स्थान को दर्शाया गया है। लोककथाओं के अनुसार आदिकाल में जब कोई भी राजा नहीं था, तब जनजातीय समुदाय एक नीबू को पत्थर के प्राकृतिक सिंहासन पर रखकर आपस में ही निर्णय कर लिया करता था। इसी परंपरा ने बाद में मुरिया दरबार के रूप में विस्तार ले लिया।

परम्परागत कला एवं शिल्प को दर्शाने के लिए झांकी की सजावट "बेलमेटल और टेराकोटा शिल्पों" से की गई है। बेलमेटल से निर्मित नंदी आत्मविश्वास और सांस्कृतिक सौंदर्य का प्रतीक है। यहां दर्शाया गया टेराकोटा शिल्प का हाथी, समुदाय की शक्ति का प्रतीक है।

"Aadim Jansansad" of Bastar Muria Darbar

The tableau of Chhattisgarh state reflects the democratic consciousness and traditional democratic values present in the tribal communities since ancient times, which are still alive and prevalent in the Bastar division of the state even after 75 years of independence. This tableau presents the story of the origin and evolution of democracy in India.

The front part of the tableau describes the female-dominant nature of the tribal communities of Bastar. It shows a woman dressed in traditional attire expressing her views. The middle part of the tableau depicts the ancient tribal form of parliament in Bastar known as Muria Darbar. This tradition of 'Muria Darbar' is more than 600 years old and it has been an important part of the world-famous event of 'Bastar Dussehra'. Certain evidences indicate that the tradition of Muria Darbar dates back to primitive times. The rear side of the tableau depicts a place named 'Limau Raja' situated in Bade Dongar, the ancient capital of Bastar. According to folklore, in ancient times, when there were no kings, the tribal community used to make decisions amongst themselves by placing a lemon on a throne naturally made of stone. This tradition later took the form of Muria Darbar.

The tableau has been decorated with "bell-metal and terracotta artefacts" to depict the traditional arts and crafts. Nandi made of bellmetal is a symbol of confidence and cultural beauty. The terracotta sculpture of an elephant placed here symbolizes the power of the community.

आंध्र प्रदेश की स्कूली शिक्षा में बदलाव – छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना

आंध्र प्रदेश की झांकी सरकार द्वारा उठाए गए शिक्षा सुधारों “आंध्र प्रदेश में स्कूली शिक्षा में बदलाव – छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना” विषय पर केन्द्रित है।

ऐसी मान्यता है कि “शिक्षा एक संपत्ति है जिसे हम बच्चों को दे सकते हैं और शिक्षा पर खर्च किया गया संपूर्ण व्यय राज्य के भविष्य के विकास हेतु निवेश होगा।” शिक्षा क्षेत्र में कई उल्लेखनीय सुधार समाविष्ट किए गए हैं और कॉर्पोरेट स्कूलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए सरकारी स्कूलों में बुनियादी ढांचे में सुधार करने के द्वारा इन स्कूलों में अंग्रेजी लैब, स्मार्ट टीवी, डिजिटल क्लास रूम आदि प्रदान करके छात्रों को वैश्विक नागरिक बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। सभी स्कूलों में प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी माध्यम से शुरुआत की गई है और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को अध्ययन सामग्री के साथ टैब प्रदान किया गया है।

शिक्षा के माध्यम संबंधी परिवर्तन की थीम को पूरी झांकी में तेलुगु से हिंदी और अंग्रेजी के अक्षरों के साथ दर्शाया गया है और सामने के हिस्से के शीर्ष पर गांव की पुरानी पद्धति के क्लास रूम एवं स्लेट के साथ छात्रों को प्रदर्शित किया गया है। झांकी के पार्श्व में दोनों तरफ बच्चों के साथ आधुनिक प्ले स्कूल की अवधारणा को दर्शाया गया है और उसके ऊपर छात्रों के साथ एक विज्ञान प्रयोगशाला है और बीच में छात्रों को टैब दिखाते हुए दर्शाया गया है। इंटरैक्टिव पैनल संबंधी और स्मार्ट टीवी के साथ एक डिजिटल क्लास रूम में जिसमें द्विभाषी पाठ्य पुस्तकें, विज्ञान लेख और गणितीय उपकरण दिखाने वाला एक मेहराब है, इसके साथ ही इंटरैक्टिव पैनल और स्मार्ट टीवी के साथ डिजिटल क्लासरूम और अंग्रेजी प्रयोगशालाएं हैं।

- आंध्र प्रदेश

Transforming School Education in Andhra Pradesh - Making Students Globally Competitive

The tableau of Andhra Pradesh is on the subject of “Transforming School Education in Andhra Pradesh - Making Students Globally Competitive” the education reforms taken up by the government.

It is believed that “Education is an asset that we can give to children and all the expenditure spent on education will be investment towards future development of the state”. Many revolutionary reforms have been introduced in education sector and moving ahead of making students as global citizens by improving infrastructure and providing English lab, Smart TVs, Digital Class Rooms etc., in Government schools to compete with corporate schools. The English medium introduced from primary level in all schools and Tabs along with study material provided to secondary school students.

The transformation of medium of education theme is depicted the entire tableaux with letters of Telugu to Hindi and to English and on the top of the front part has showcased the old pattern of village class room and students with slate. And on the rear depicted modern play school concept on either sides with children and on above a science lab with students and in the middle projected the students showing tabs. A digital class room with interactive panels and smart TV with an arch showing the bilingual text books, science articles and mathematical instrument followed by Digital classrooms and English labs with interactive panels and Smart TV.

- ANDHRA PRADESH





विकसित भारत: लद्दाख की यात्रा, रोजगार के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण

ऊँचे दरों की भूमि और भारत में एक नवगठित केंद्र शासित प्रदेश के रूप में उभरने वाला लद्दाख, अपने लुभावने परिदृश्यों, पहाड़ों, बर्फ, ठंडे रेगिस्तानों, अल्पाइन घास के मैदानों और आस-पास की झीलों के लिए प्रसिद्ध है जो एक पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य प्रदान करता है। इसकी विविध भाषाएँ, धर्म, नृत्य रूप, संगीत, वास्तुकला, भोजन और रीति-रिवाज एक साथ मिलकर एक जीवंत सांस्कृतिक तस्वीर बनाते हैं।

केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा प्राप्त करने के बाद से, लद्दाख उत्साहपूर्वक तेजी से विकास किया है एवं एक नए मिशन के लिए अपने को तैयार करते हुए, रोजगार की पहल के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर जोर दे रहा है।

भारतीय महिला आइस हॉकी टीम, जिसमें विशेष रूप से लद्दाखी खिलाड़ी शामिल हैं जो सशक्तिकरण की इस यात्रा का प्रतीक है। उल्लेखनीय रूप से, 1.3 बिलियन से अधिक लोगों के देश में, हॉकी टीम का हर सदस्य लद्दाख से है, इस उपलब्धि को दर्शाते हुए, हम लड़कियों को ट्रैक्टर के हिस्से में बर्फ के बीच आइस हॉकी खेलते हुए दिखाते हैं। जटिल शिल्प कौशल और जीवंत रंगों को प्रदर्शित किया लद्दाख के उत्कृष्ट सजावटी पारंपरिक द्वार, क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं, जिन्हें ट्रैक्टर के पीछे रखा गया है और किनारों को खुबानी के फूलों से सजाया गया है। ट्रैक्टर के सबसे आगे, एक लद्दाखी गांव प्रदर्शित कर रहे हैं, जो बिजली, शिक्षा और सस्टेनेबल रिसोर्सेज प्रदान करके जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए लद्दाख की प्रतिबद्धता का उदाहरण है। सौर पैनलों से सुसज्जित घर दर्शाए गए हैं जबकि बच्चे तेज रोशनी में पढ़ रहे हैं, जो क्षेत्र की प्रगतिशील पहल का प्रतीक हैं। ट्रैक्टर के मध्य भाग में लद्दाखियों को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में शामिल दिखाया गया है, जैसे खुबानी जैम, सीबक थॉर्न का रस, लकड़ी के सामान का उत्पादन और खुबानी के पेड़, जो वास्तव में उन युवा गतिशील उद्यमियों का प्रतिनिधित्व करता है जो लद्दाख के नवाचार-समृद्ध भविष्य की आकांक्षा रखते हैं। अंतिम खंड में, एक लद्दाखी पहाड़ी की चोटी को प्रदर्शित कर रहे हैं जो उमलिंग-ला पास दुनिया की सबसे ऊंची मोटर योग्य सड़क, सोलराइज्ड एलईडी स्ट्रीट लाइट्स के साथ को उजागर करती है। इसके अतिरिक्त, बकरियों की देखभाल करने वाले खानाबदोश व्यक्तियों और कुशल पशुमाला बुनकरों पर भी प्रकाश डाला गया है। झांकी के दोनों किनारों पर लद्दाख की सभी जातीय जनजातियों की महिला कलाकार शामिल हैं, जिनमें लद्दाखी, बलती, पुर्गी, शीना, ब्रोक्पा/आर्यन, चांगपा आदि शामिल हैं।

Viksit Bharat: Empowering Women through Employment in Ladakh's Journey

Ladakh, celebrated as the Land of High Passes and a newly formed Union Territory in India, is renowned for its breathtaking landscapes, encompassing mountains, snow, cold deserts, alpine meadows, and lakes in close proximity—an utterly mesmerizing spectacle. Its diverse languages, religions, dance forms, music, architecture, cuisine, and customs harmoniously come together, forming a vibrant cultural mosaic.

Since attaining UT status, Ladakh fervently pursues rapid development, emphasizing women's empowerment through employment initiatives, while gearing up for a new mission.

The Indian Women's Ice Hockey Team, exclusively composed of Ladakhi players, symbolizes this journey of empowerment. Remarkably, in a nation of over 1.3 billion people, every member hails from Ladakh, illustrating this feat, we feature girls playing ice hockey amidst the snow in tractor part. Ladakh's exquisite decorative traditional gates, displaying intricate craftsmanship and vibrant hues, reflect the region's opulent cultural heritage which is placed at the back of the tractor and adorned the sides with apricot flowers. At the forefront of the trailer, we highlight a Ladakhi village, exemplifying Ladakh's commitment to elevating living standards by providing electricity, education, and sustainable resources. Depicted are homes equipped with solar panels, emblematic of the region's progressive initiatives, while children study under the bright light. The middle section of the trailer portrays Ladakhis involved in various economic activities, such as producing apricot jam, seabuck thorn juice, crafting wooden articles, and an apricot tree, truly representing the young dynamic entrepreneurs aspire for innovation-rich future of Ladakh. In the final segment, we showcase a Ladakhi hilltop, highlighting the crown of the world's highest motorable road rests with Umling-La pass, Solarised LED Street lights. Additionally, we spotlight nomadic individuals tending to goats, and skilled pashmina weavers. Both sides of the tableau feature female artists from all the ethnic tribes of Ladakh including Ladakhi, Balti, Purgi, Sheena, Brokpa/Aryan, Changpa etc.

- लद्दाख

- LADAKH

प्राचीन तमिलनाडु में कुदावोलाई प्रणाली – लोकतंत्र की जननी

यह झांकी तमिलनाडु में 10वीं शताब्दी के चोल युग के दौरान लागू कुदावोलाई प्रणाली (ताड़ के पत्तों के जरिए मतदान) का प्रतिनिधित्व करती है, जो लोकतंत्र का एक बुनियादी अग्रदूत है। इसका उपयोग ग्रामीण प्रशासन को चलाने हेतु प्रतिनिधियों को चुनने और क्षेत्र की आवाज को साम्राज्य तक पहुंचाने के लिए किया जाता था। कुदावोलाई प्रणाली का प्रमाण तमिलनाडु के कांचीपुरम जिले के उथिरामेरुर शिलालेखों में मिलता है। इस प्रणाली को लोकतंत्र की दिशा में उठाया गया प्रारंभिक कदम बताया जाता है।

अगले हिस्से में बनी मूर्ति पॉट यानी बर्तन में सभी वोट डाले जाने के बाद प्रतिनिधि चयन प्रक्रिया को दर्शाती है। झांकी का मध्य और पिछला भाग चुनाव प्रचार प्रक्रिया और ग्राम विकास योजना की तैयारी को दर्शाता है। झांकी का मध्य और पिछला भाग इसमें लोगों को महत्वपूर्ण सूचना सुनाने के लिए ढोल का प्रयोग करते हुए दर्शाया गया है। एक विशेष वार्ड के सभी लोग अपना मतदान टिकट मटके में डालने के लिए कतार में खड़े होते हैं। चयन प्रक्रिया को पवित्र माना जाता था। नेता का चयन करने के लिए, एक छोटा लड़का मटके से एक टिकट उठाता है और फिर निर्वाचित व्यक्ति का जोर-जोर से उल्लेख करते हुए परिणाम की घोषणा की जाती है। निर्वाचित व्यक्ति को बड़ों द्वारा माला पहनाकर सम्मानित किया जाता है और जीत का जश्न नृत्य – थापट्टम, ओयिलट्टम के साथ मनाया जाता है। ग्राम विकास योजना तैयार करने के लिए बरगद के पेड़ के नीचे ग्रामीणों की सभा होती थी। झांकी में उथिरामेरुर में वैकुंड पेरुमल मंदिर का एक दर्शनीय मॉडल शामिल है, जहां कुदावोलाई प्रणाली लागू और प्रचलित थी।

Kudavolai System in ancient Tamil Nadu- Mother of Democracy

This Tableau represents Kudavolai System (Leaf Ballots in Pot), implemented during 10th Century Chola Era in Tamil Nadu, a foundational precursor to democracy. It is used to elect representatives to run the village administration and reflect the voice of the region to the empire. The evidence for Kudavolai System is found in Uthiramerur inscriptions in Kanchipuram district of Tamil Nadu. This System marked an early stride towards democracy.

The sculpture in front portion depicts representative selection process after all the votes are cast in the pot. The middle and rear portion depicts electioneering process & preparation of Village Development Plan. It shows drum used to announce important information to the people. All the people from a particular ward stand in line to cast their voting tickets into the pot. The selection process was considered sacred. To select the leader, a small boy picked up a ticket from pot & then result was announced with loudly mentioning the elected person. The elected person is honoured by placing garland by elders & victory is celebrated with dances – Thapattam, Oyilattam. Gathering of Villagers used to take place under a banyan tree for preparing Village Development Plan. The tableau includes a scale model of Vaikunda Perumal Temple in Uthiramerur where Kudavolai system is featured & practiced.

- तमिलनाडु

- TAMIL NADU





धोरडो : गुजरात के सीमा पर्यटन की वैश्विक पहचान

धोरडो, भारत के पश्चिम छोर पर गुजरात के कच्छ जिले में स्थित एक छोटा-सा गांव है जो अपनी जीवंत सांस्कृतिक विरासत के लिए मशहूर है। इस सीमावर्ती गांव को सफेद रण का द्वार कहा जाता है, जो अपनी परंपरागत हस्तकला, लोक संगीत और रण उत्सव को मानता है। धोरडो को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) द्वारा "बेस्ट टूरिज्म विलेज" से सम्मानित किया गया है। इसलिए, गुजरात राज्य की झांकी का विषय 'धोरडो : गुजरात के सीमा पर्यटन की वैश्विक पहचान' है।

झांकी में सबसे सामने दिख रहे घूमते ग्लोब में गुजरात की भौगोलिक स्थिति को दर्शाया गया है। ग्लोब के ऊपर बने गुजरात के मानचित्र में "भूंगा" नामक कच्ची घरों से लेकर स्थानीय हस्तशिल्प और रोगन कला के कौशल को दिखाया गया है। गुजरात के मानचित्र में बहुत ही सुंदर, सुसंस्कृत और जीवंतता को प्रदर्शित करती गांव की यह दृश्यावली बताती है कि क्यों गुजरात आज विश्व पर्यटन की एक नई पहचान है। गांव की डिजिटल तरक्की को एक विदेशी सैलानी ने पारंपरिक पोशाक में डिजिटल तरीके से भुगतान करते हुए दिखाया है जो तथ्य की पहचान है कि कच्छ संगीत, कला और तकनीक के क्षेत्र में एक आदर्श स्थान है।

झांकी में, पारंपरिक वेषभूषा में पारंपरिक गरबा करती महिलाएं गुजरात की ऐतिहासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रही हैं यह चित्रण गुजरात के अतिहासिक और संस्कृति जड को विन। हाल ही में, यूनेस्को ने गुजरात के गरबा को 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' में शामिल किया है जो हर गुजरातवासी के साथ-साथ हर भारतवासी के लिए गौरव की बात है।

Dhordo: A Global Icon of Gujarat's Border Tourism

Dhordo, a small village located in Kachchh district of Gujarat, on the western tip of India, has become synonymous with its rich cultural heritage. This border village, known as the gateway to the picturesque White Rann, celebrates its traditional handicrafts, folk music, and annual Rann Utsav. Dhordo has now been awarded the prestigious title of "Best Tourism Village" by the United Nations World Tourism Organization (UNWTO). This recognition sets the stage for the theme of the Gujarat state tableau: 'Dhordo: A Global Icon of Gujarat's Border Tourism.'

The tableau ingeniously captures Gujarat's geographical location through a rotating globe at the forefront. Above this globe, the map of Gujarat unfolds, showcasing the unique Kachchhi houses known as Bhunga, local handicrafts, and Rogan art work. This captivating portrayal paints a vivid picture of a beautiful, cultured, and vibrant village that has become a beacon for global tourism. Notably, the tableau features a scene where a foreign tourist, adorned in traditional attire, makes a digital payment, symbolizing the technological advancements in this village.

As the tableau progresses, women dressed in traditional attire grace the scene, engaging in the traditional Garba. This representation pays homage to the historical and cultural roots of Gujarat. Recently, UNESCO recognized Gujarat's Garba as part of the 'Intangible Cultural Heritage,' a source of immense pride not only for every Gujarati but also for every Indian.

- गुजरात

- GUJARAT

मेघालय का फलता-फूलता पर्यटन

मेघालय की झांकी में इसके चेरी ब्लासम फूलों का मोहक प्रदर्शन किया गया है जो प्राकृतिक दृश्य को गुलाबी रंगत से सज्जित एक कैनवास बना देता है। कोमल-कोमल झूलते फूलों से सुसज्जित चेरी ब्लासम के वृक्ष एक वासन्ती के स्वर्ग के समान सम्मोहक दृश्य को दर्शाता है। इनकी मुलायम पंखुड़ियां जमीन पर एक स्वच्छ परत की तरह बिछी हुई हैं जो शांति और सुन्दरता को दर्शाता है। दृश्य भव्यता के साथ ही भावुक तत्व को दर्शाता हुआ यह चित्रण नवीनता, क्षणभंगुर सुन्दरता का संकेत करने के साथ हो वसन्त आगमन पर मेघालय के चेरी ब्लासम ऋतु के सम्मोहन में उतरने दर्शकों को मोह लेता है।

धीरे-धीरे से परिवर्तित होते हुए, झांकी डावकी में उमंगोट नदी पर स्थित ताजे पानी की स्कूबा डाइविंग अद्भुत स्थलों में डूब जाती है। अद्भुत जलीय जीवन से घिरे हुए साफ-चमकते जल से निकलते गोताखोर दिखाई दे रहे हैं जो राज्य की कम जानी पहचानी परन्तु मोहक एवं साहसिक कार्यकलाप को दिखाता है।

आगे और बढ़ने पर, झांकी स्टेलेस्टाइस और स्लेगमाइट्स से चमकते हुए शाश्वत गुफाओं की खोज करते हुए दिखाती है। खोजकर्ता इन प्राचीन गुफाओं में जोखिम उठाकर जाते हैं, जिनमें मेघालियन समय की फुसफुसाहट गुंजती है। इस चित्र समकालीन साहसिक कार्यों के साथ मेघालय की भौगोलिक बनावटों के गहरे ऐतिहासिक महत्व को गूँथता गया है जो राज्य की मोहक गुफाओं के अन्दर शताब्दियों को जोड़ता है।

इसके बाद यह झांकी साहसीका खेल-कूद के रोमांच जिपलाइनर्स को घाटी से जाते हुए और रेपलर्स बहुत ऊंचाई से नीचे आते हुए दिखाई देते हैं जो मेघालय का एक एड्रेनिल खोजी के स्वर्ग के रूप में संभावना को दर्शाता है। इसमें मेघालय के समृद्ध जैव संसाधन पर विशेष बल दिया गया है, जिसमें वनस्पति और स्थानीय प्रजातियां जैसे क्लाउडेड लेपर्ड को प्रदर्शित करता है, संरक्षण के प्रयासों पर जोर देता है। आखिर में झांकी म्याननॉग, एशिया के स्वच्छतम गांव में किए गए समुदाय – आधारित साफ – सफाई के प्रयासों को दिखाया गया है जिसमें सफाई अभियान में सभी उम्र के नागरिकों को भाग लेते हुए दिखाया गया है जो साफ-सुथरे वातावरण में एकता और समर्पण को दर्शाता है।

यह भिन्न-भिन्न थीमें मेघालय की सांस्कृतिक समृद्धि, प्राकृतिक अजूबों और सामुदायिक भावना को एकसूत्र बनाकर संक्षेप में दर्शाती है।

Meghalaya's Flourishing Tourism

The tableau opens an enchanting display of Meghalaya's cherry blossoms, transforming the landscape into a canvas awash in delicate shades of pink. Cherry blossom trees, adorned with gently swaying blossoms, create a mesmerizing scene akin to a dreamy springtime paradise. Their soft petals form a serene carpet on the ground, evoking tranquility and beauty. Capturing both visual splendor and emotional essence, this portrayal symbolizes renewal, fleeting beauty, and the arrival of spring, inviting viewers to immerse themselves in the enchantment of Meghalaya's cherry blossom season.

Transitioning, the tableau plunges into a unique freshwater scuba diving sites along the Umngot River in Dawki. Divers emerge from crystal-clear waters surrounded by vibrant aquatic life, highlighting the state's lesser-known yet captivating adventure offerings.

Moving deeper, the tableau delves into Meghalaya's timeless caves, illuminated by stalactites and stalagmites. Explorers venture into these ancient caverns, echoing the whispers of the Meghalayan age. This portrayal intertwines contemporary adventure with the profound historical significance of Meghalaya's geological formations, bridging millennia within the state's captivating caves.

The tableau then showcases the thrill of adventure sports, zipliners soaring across valleys, and rappellers descending from great heights, showcasing Meghalaya's appeal as an adrenaline seeker's paradise. It also highlights Meghalaya's rich bioreserve, displaying its flora, and endemic species like the clouded leopard, emphasizing conservation efforts. Finally, the tableau celebrates community-led cleanliness initiatives in Mawlynnong, Asia's cleanest village, portraying residents of all ages participating in cleanliness drives, symbolizing unity and dedication to a pristine environment.

These diverse themes intricately weave together, encapsulating Meghalaya's cultural richness, natural wonders, and communal spirit.

- मेघालय

- MEGHALAYA





झारखंड का तसर सिल्क

तसर सिल्क की समृद्ध जिसे 'कोसा' अथवा "वन्य सिल्क" कहा जाता था, अब यह "अहिमसा सिल्क" के रूप में पूरी दुनिया में ख्याति अर्जित कर रहा है। तसर के लिए कोकून उत्पादन की नई तकनीक में तसर कीट को जिन्दा निकलने दिया जा रहा है जबकि पारम्परिक मलबरी सिल्क के उत्पादन में कोकून को गर्म पानी में उबालने के कारण तसर की मौत हो जाती थी। इस प्रकार से तसर सिल्क पृथ्वी की जैव विविधता के संरक्षण में सहायक साबित हो रही है। राज्य में चारों ओर फैले विशाल वन क्षेत्र में तसर खाद्य पौधों की प्राकृतिक उपलब्धता और मौसम की अनुकूलता से यह प्रदेश देश में प्राकृतिक तसर रेशम का प्रमुख तथा अग्रणी उत्पादक राज्य है। देश में उत्पादित तसर का 62 प्रतिशत हिस्सा झारखंड में उत्पादित हो रहा है। झारखंड से उत्पादित तसर को यूएस, यूके, जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों में निर्यात किया जा रहा है। झारखंड के तसर को प्रतिष्ठित जीआई टैग दिलाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

इस राज्य में उत्पादित तसर अपने प्राकृतिक रंग एवं चमक के कारण रेशमी परिधानों में अपनी अलग पहचान रखता है, विशेष रूप से राज्य के जंगलों से प्राप्त तसर रेशम अन्य से अलग है। झारखंड राज्य में प्रतिवर्ष औसतन करीब 20500 मीट्रिक टन तसर का उत्पादन के साथ राज्य के विभिन्न जनजातीय समूहों के तकरीबन एक लाख पचास हजार लोग तसर सिल्क से अपनी आजीविका चला रहे हैं। करीब 150 महिलाएं "आजीविका रेशम मित्र" के तौर पर मास्टर ट्रेनर के रूप में तसर उत्पादन के क्षेत्र में लगे लोगों को वैज्ञानिक तरीके से तसर उत्पादन का प्रशिक्षण दे रही हैं, जिससे ग्रामीण आदिवासी महिलाएं मात्र दो महीनों की मेहनत से 35000-45000 रु. सालाना कमा रही हैं।

झांकी में तसर सिल्क के उत्पादन में जनजातीय महिलाओं का उत्थान दर्शाया गया है। झांकी में कोकून उत्पादन एवं संग्रहण में शामिल जनजातीय महिलाओं की जीवटता प्रदर्शित की गई है। झांकी में तसर कीट का पालन तथा तसर बुनाई, आधुनिक वस्त्र परिधान की डिजाईनिंग और देशविदेशों में की जा रही वितरण को प्रदर्शित किया गया है। झांकी के साथ-साथ, राज्य का सांस्कृतिक दल अपने झूमर नृत्य की लय-ताल और स्थानीय संगीत से झारखंड राज्य की जीवंतता प्रदर्शित कर रहा है।

- झारखण्ड

Jharkhand's Tasar Silk

Transporting us through the rich heritage of Tasar Silk, once known as 'Kosa' or 'Vanya Silk (Forest Silk),' it now embraces the world as 'Ahimsa Silk.' In the new technique of cocoon production for Tasar, the Tasar moth emerges alive, preserving biodiversity, a departure from the traditional method of making Malbari Slik where the moth was killed. Jharkhand, with its natural abundance of Tasar food plants and favorable weather, stands as the main producer of natural Tasar silk in India. About 62 percent of India's Tasar is produced in Jharkhand, with exports to countries like the US, UK, Germany, and France. Jharkhand has also applied for the prestigious GI (Geographical Indication) tag for its Tasar Silk.

The uniqueness of Tasar from this region - its sheen, color, and distinctiveness - finds its roots in the Jharkhand State, particularly in the abundant forests. Approximately 1,50,000 people from various tribal groups in the state earn their livelihood from Tasar Silk, with an annual production averaging about 20,500 MT in Jharkhand. Notably, 150 women, known as "Aajeevika Resham Mitra," train others in scientific methods of Tasar production, allowing rural tribal women to earn between Rs 35,000-45,000 annually through two months of work.

Upon the tableau, the resilience of tribal women in production of Tasar Silk will be showcased. The tableau will come alive with depictions of Tasar moth rearing, cocoon production, weaving, and the modern journey of Tasar garments from design to global distribution. Complemented by the state's cultural troupe, the performance will exude the vibrant spirit of Jharkhand through the rhythmic beats of jhumar dance and indigenous music.

- JHARKHAND

विकसित भारत : समृद्ध विरासत

अयोध्या में 22 जनवरी, 2024 को रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम हुआ, इसलिए झांकी के अग्रभाग में मंदिर जैसे बेस पर स्थापित रामलला की सुंदर प्रतिमा को दर्शाया गया है।

ट्रेलर पर सर्वप्रथम कलश के प्रतीक के साथ दो साधुओं को दिखाया गया है जो कि प्रयागराज में आयोजित होने वाले आगामी माघ मेले एवं वर्ष 2025 में होने वाले महाकुंभ का प्रतीक है।

फ्रिल के बिल्कुल ऊपर के क्षेत्र में एलईडी स्क्रीन पर प्रभु राम के अयोध्या आगमन के प्रतीकस्वरूप होने वाले दीपोत्सव को दर्शाया गया है। अगली तस्वीर दुनिया के चौथे सबसे बड़े इंटरनेशनल एयरपोर्ट 'जेवर एयरपोर्ट' की है। नोएडा में एशिया की सबसे बड़ी मोबाइल मैनुफैक्चरिंग फैक्ट्री को मोबाइल उत्पादन के क्षेत्र में उत्तरप्रदेश को प्रमुख हब के तौर पर विकसित होने के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त, 6 संचालित एवं 7 निर्माणाधीन एक्सप्रेसवे सहित प्रदेश के रूपांतरण को 'एक्सप्रेसवे-प्रदेश' के रूप में भी दर्शाया गया है।

झांकी के मध्य में साधुओं के बाद रैपिड रेल का मॉडल है, जोकि गाजियाबाद से दुहाई तक संचालित रैपिड रेल सेवा के देश में सर्वप्रथम आगमन का द्योतक है। सबसे अंत में ब्रह्मोस मिसाइल को दर्शाया गया है जो एक ऐसा उत्पाद है जिसका निर्माण सिर्फ उत्तर प्रदेश में हो रहा है, जिसके परिणास्वरूप उत्तर भारत में प्रदेश को ऐसी प्रौद्योगिकियों के हब के तौर पर प्रख्यापित किया गया है। अंत में मेक इन इंडिया का प्रतीकात्मक सिंह स्वदेशी निर्माण के अभियान में उत्तर प्रदेश की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

Viksit Bharat Samradh Virasat

The consecration ceremony of the Ram Lalla idol took place on 22 January 2024, in Ayodhya. Therefore, a beautiful idol of Ram Lala placed on a temple-like base has been showcased in the front of the tableau.

First of all, the trailer features two sadhus with the Kalash symbol, emblematic of the upcoming Magh Mela in Prayagraj and the Mahakumbh to be held in 2025.

Above the frill, the LED screen displays the Festival of Lights, symbolizing the auspicious arrival of Prabhu Shri Ram in Ayodhya. The subsequent image showcases Jewar Airport, the fourth-largest international airport in the World. Serving as a symbol, Asia's largest mobile manufacturing factory in Noida represents Uttar Pradesh's ascent as a prominent hub for mobile production. Additionally, there is the depiction of state's transformation into an "expressway state" with 6 operational and 7 under construction expressways.

In middle portion of tableau, Sadhus have been shown and behind them is placed the Rapid Rail which is the first high speed rail service (RRTS) in the country connecting Ghaziabad to Duhai. In the rear portion is shown the BrahMos missile - a product exclusively manufactured in Uttar Pradesh, establishing the state as a hub for such advancements in North India. Finally, the emblematic lion of Make in India signifies Uttar Pradesh's role in advancing the national campaign for indigenous manufacturing.

- उत्तर प्रदेश

- UTTAR PRADESH





जमीनी स्तर पर लोकतंत्र : तेलंगाना के स्वतंत्रता सेनानियों की विरासत

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन हुए आर्थिक और प्रशासनिक शोषण का प्रत्येक भारतीय के जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ा। इस तमस काल ने अपनी चुनौतियों के साथ एक ऐसे आंदोलन को जन्म दिया जो भारत की स्वतंत्रता और संप्रभुता की राह में एक महत्वपूर्ण अध्याय बन गया।

तेलंगाना में कोमाराम भीम, रामजी गोंड और चित्याला इलम्मा, जिन्हें चकली इलम्मा के नाम से भी जाना जाता है, जैसे व्यक्तियों के साहसी और वीरतापूर्ण प्रयास यहाँ की लोककथाओं में प्रचलित हैं। 20वीं शताब्दी के शुरुआती दौर के इन क्रांतिकारियों ने स्व-शासन और लोकतंत्र के सिद्धांतों का समर्थन किया।

कोमाराम भीम और रामजी गोंड स्वदेशी आदिवासी समुदायों की स्वतंत्रता, सम्मान और अधिकारों के लिए संघर्षरत रहे। उन्होंने व्यापक समर्थन हासिल करने और सशक्तिकरण और न्याय का एक प्रभावशाली संदेश फैलाने के लिए गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई, जो "जल, जंगल, जमीन" (वाटर, फॉरेस्ट, लैंड) के नारे के तौर पर परिणत हुआ।

चित्याला इलम्मा, सामंतवादी जमींदारों द्वारा खेतिहर एवं किसानों पर किए गए शोषण की गवाह थीं। अटूट संकल्प के साथ, उन्होंने इन समुदायों को अपने उत्पीड़कों का मुकाबला करने और चुनौती देने के लिए प्रेरित किया।

आज के युग में ये शोषित समुदायों की प्रेरणा, न्याय, समानता और अधिकारों के लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक एवं ज्योतिपुंज बने हुए हैं। उनके बलिदानों ने क्षेत्र के भीतर सामाजिक और आर्थिक न्याय, प्रतिष्ठा और अवसर की समानता और व्यक्तिगत गरिमा के अधिकारों की नींव रखी।

वर्तमान समय में, ग्राम सभाओं और पंचायतों की स्थापना ने स्थानीय आदिवासियों को सशक्त बनाया है, जिससे "जल, जंगल, जमीन" पर उनके उचित दावों को सुनिश्चित तौर पर मान्यता और सुरक्षा मिलती रहे। इन स्वतंत्रता सेनानियों का व्यक्तित्व हमें जमीनी स्तर पर लोकतंत्र के सिद्धांतों को बनाए रखने की प्रतिबद्धता को बल प्रदान करता रहता है।

Democracy at the Grassroots: The Legacy of Telangana's Freedom Fighters

The economic and administrative exploitation under British colonial rule had a detrimental impact on the lives of every Indian. This dark era, while challenging, gave rise to a movement that became a defining chapter in India's journey to independence and sovereignty.

In the heart of Telangana, the courageous and heroic efforts of individuals like Komaram Bheem, Ramji Gond, and Chityala Ilamma, also known as Chakali Ilamma, have become woven into the region's folklore. These revolutionaries of the early 20th century championed the principles of self-rule and people's democracy (Loktantra).

Komaram Bheem and Ramji Gond stood up for the freedom, dignity, and rights of indigenous tribal communities. They adopted guerrilla warfare tactics to gain broad support and spread a powerful message of empowerment and justice, encapsulated in the rallying cry "Jal, Jangal, Zameen" (Water, Forest, Land).

Chityala Ilamma bore witness to the exploitation of tillers and farmers by feudal landlords. With unwavering resolve, she galvanized these communities to confront and challenge their oppressors.

Today, they remain beacons of inspiration, embodying democratic values of justice, equality, and rights of marginalized communities. Their sacrifices laid the groundwork for social and economic justice, equality of status and opportunity, and affirmation of individual dignity within the region.

In contemporary times, the establishment of Gram Sabhas and Panchayats has empowered local tribal, ensuring recognition and protection of their rightful claims to "Jal, Jangal, and Zameen". The spirit of these freedom fighters continues to fuel our commitment to uphold the tenets of democracy at the grassroots level.

- तेलंगाना

- TELANGANA

चंद्रयान-3 भारतीय अंतरिक्ष के इतिहास में एक आख्यान

चंद्रयान-3 झांकी चंद्रयान-3 स्पेसक्राफ्ट के चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट सुगमतापूर्वक उतरने को चित्रित करती है। इससे भारत दक्षिणी ध्रुव के निकट स्पेसक्राफ्ट को सुगमता से उतारने वाला विश्व का पहला देश बन गया है।

चंद्रयान-3 मिशन की शुरुआत इसरो के एलवीएम-3 का प्रयोग कर के एसडीएससी, एसएचएआर, श्री हरिकोटा से 14 जुलाई, 2023 को की गई थी। यह स्पेसक्राफ्ट 23 अगस्त, 2023 को चंद्रमा पर सुगमतापूर्वक उतरा था। देश के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा यह दिन भारत के राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के नाम पर निर्धारित किया गया था।

इस झांकी के शीर्ष पर लांच व्हिकल एलवीएम-3 है, जिसने चंद्रयान-3 स्पेसक्राफ्ट को चैत्र से 100 कि.मी. दक्षिण में पूर्व तट पर स्थित इस भारतीय स्पेसपोर्ट को सतीशधवन स्पेस सेंटर (एसडीएससी-एसएचएआर) से चंद्रमा में लांच किया था। इसका मध्य भाग बेंगलुरु के मिशन ऑपरेशन कॉम्प्लेक्स (एमओएक्स) में स्पेसक्राफ्ट का सुगमतापूर्वक लैंडिंग में महिला वैज्ञानिकों (नारीशक्ति) की सहभागिता को रेखांकित करता है। तीसरा भाग जिसका नाम भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा शिवशक्ति प्वाइंट के नाम पर रखा गया था और जो दक्षिणी ध्रुव के निकट स्थित है, चंद्रयान-3 स्पेसक्राफ्ट के मूनलैंडिंग स्थल की विशेषताएं प्रदर्शित करता है। यह झांकी सूर्य के लिए सफल आदियाल-1 मिशन और गगनयान, भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन तथा ऐसे अन्य भावी इसरो मिशनों को भी प्रदर्शित करती है। आर्यभट्ट और वारहमिहिर जैसे प्राचीन ज्योतिषियों और अंतरिक्षपथ प्रदर्शकों को किनारे की दीवारों पर सजाए गए भित्ति चित्रों में दर्शाया गया है।

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

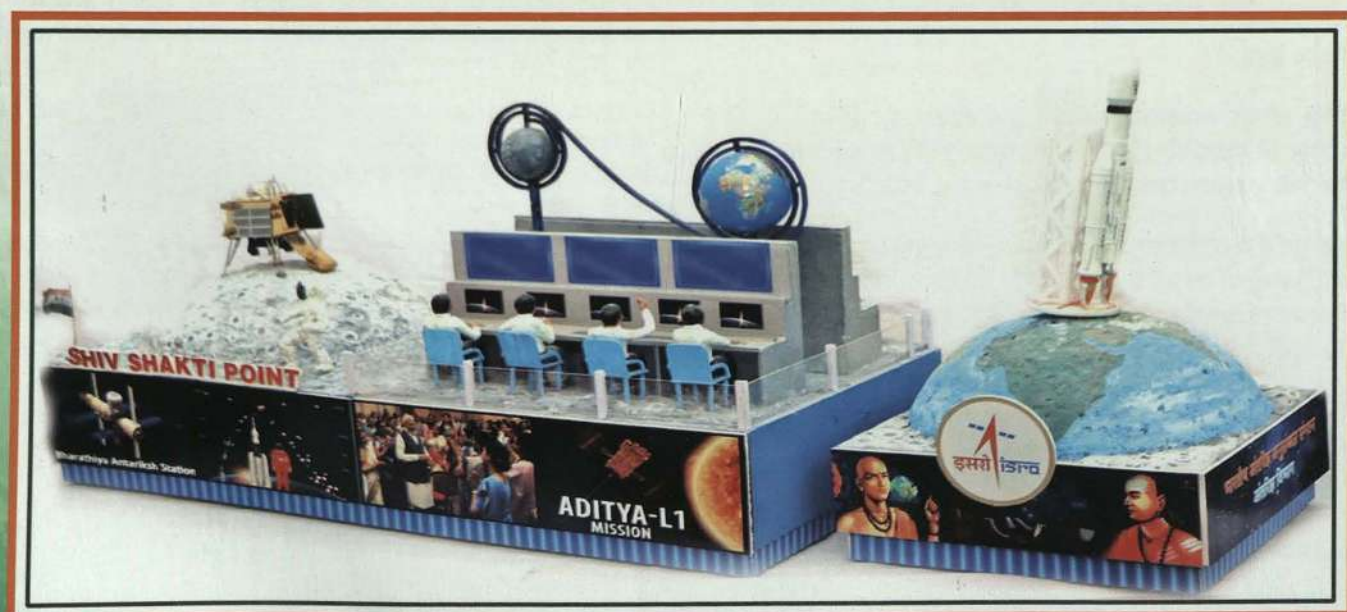
Chandrayaan-3 - a Saga in the Indian Space History

The Chandrayaan-3 Tableau depicts the successful soft-landing of the Chandrayaan-3 Spacecraft on the Moon near its South Pole. This makes India the first nation in the world to soft land a spacecraft near to the South Pole.

The Chandrayaan-3 Mission was launched on July 14, 2023 from SDSC SHAR, Sriharikota, using ISRO's LVM-3 Launch Vehicle. On August 23, 2023, the spacecraft accomplished a soft landing on the Moon. This day was named after India's National Space Day by the country's honourable prime minister.

At the head of the table is the Launch Vehicle LVM-3, which launched the Chandrayaan-3 spacecraft to the moon from Satish Dhawan Space Centre (SDSC-SHAR), the Indian space port situated on the east coast, 100 km south of Chennai. The middle section highlights the participation of Women Scientists (Nari Shakti) in the Soft Landing of space craft, at the Mission Operation Complex (MOX) in Bengaluru. The third section features the Moon landing site of the Chandrayaan-3 spacecraft, which was named Shiv Shakti Point by the Hon'ble Prime Minister of India, and is located near to the South Pole. The Tableau also illustrates the successful Aditya-L1 mission to the Sun as well as future ISRO missions such as Gaganyaan, Bharatiya Antariksh Station, and others. Ancient astronomers and space pioneers like Aryabhatta and Varahamihir are shown in the murals that adorn the side walls.

- INDIAN SPACE RESEARCH ORGANISATION





सीएसआईआर के वैज्ञानिक अंतराक्षेपों से पर्पल रेवोल्यूशन

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की दृष्ट्याकर्षक झांकी विकसित भारत थीम के अनुरूप है और यह झांकी जम्मू और कश्मीर में लैवेंडर की खेती के माध्यम से शुरू की गई पर्पल रेवोल्यूशन पर आधारित है।

सीएसआईआर ने जम्मू-कश्मीर के समशीतोष्ण क्षेत्रों में खेती के लिए उपयुक्त लैवेंडर की एक विशिष्ट किस्म विकसित की और किसानों को मुफ्त पौधे तथा उद्देश्यपरक कृषि-प्रौद्योगिकियां उपलब्ध कराईं और संगंधीय तेल निकालने के लिए आसवन इकाइयां भी स्थापित कीं। जम्मू-कश्मीर में लैवेंडर की खेती की सफलता ने इसे 'पर्पल रेवोल्यूशन' नाम दिया। यह झांकी लैवेंडर की खेती, कटाई, प्रसंस्करण और उत्पादों के विकास, लैवेंडर को प्रयोगशाला से बाजार तक ले जाने, भारत में कृषि-स्टार्ट-अप्स की एक नई संस्कृति विकसित करने की कहानी बयां करती है।

झांकी का अगला भाग लैवेंडर की प्रचुर खेती और जम्मू-कश्मीर की 21वीं सदी की सशक्त महिला किसान की मूर्ति को दर्शाता है। इसका मध्य भाग सीएसआईआर वैज्ञानिकों द्वारा वैज्ञानिक अंतराक्षेप और किसान को पौधे भेंट करते हुए दर्शाता है। मध्य भाग में लैवेंडर कृषिभूमि पर काम करने वाले किसान सम्मिलित हैं। कृषि-यांत्रिक प्रौद्योगिकी के तहत, सीएसआईआर द्वारा स्वदेश में विकसित भारत का पहला महिला-अनुकूल कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर, प्राइम ईटी-11, प्रदर्शित किया गया है। कृषि-तकनीकी विकास पर प्रकाश डालते हुए लैवेंडर फूलों से संगंधीय तेल निकालने के लिए आसवन इकाई भी दर्शाई गयी है। इसका पिछला भाग भारत में कृषि-स्टार्ट-अप्स की अवधारणा और लैवेंडर आधारित उत्पादों (इत्र, तेल, अगरबत्ती) के निर्यात को दर्शाता है। महिला कलाकारों से सुसज्जित सीएसआईआर झांकी सरकार की पहल के तहत किसानों की आय, नारी शक्ति, कृषि-स्टार्ट-अप्स और वैश्विक व्यापार बढ़ाने वाले वैज्ञानिक विकास जैसी उपलब्धियां प्रदर्शित करती है।

Purple Revolution through Scientific Interventions of CSIR

The visually enchanting Tableaux of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), aligns with the Viksit Bharat theme and is on the Purple Revolution ushered through Lavender cultivation in Jammu & Kashmir.

CSIR developed an elite variety of lavender suitable for cultivation in temperate regions of J&K and provided free saplings and end-to-end agro-technologies to farmers and also installed distillation units for essential oil extraction. The success of Lavender cultivation in J&K earned it the sobriquet, 'Purple Revolution'. The Tableaux narrates the story of lavender cultivation, harvesting, processing and products development, taking lavender from lab-to-market, blooming a new culture of Agri-start-ups in India.

The front section of Tableaux represents ample cultivation of lavender and an empowered 21st century woman farmer figurine from J&K. The middle section showcases scientific intervention by CSIR Scientists and offering saplings to a farmer. The middle section features farmers working on the lavender farmland. Under agro-mechanical technology, the indigenously developed India's first women-friendly compact electric tractor of CSIR, PRIMA ET11, is showcased. Highlighting agro-technical developments, the distillation unit for extracting essential oil from lavender flowers is also shown. The rear section features the concept of Agri-start-ups in India and export of lavender based products (perfumes, oil, incense sticks). The all women CSIR Tableaux showcases achievements under Government's initiatives of scientific developments enhancing farmers' incomes, Naari Shakti, Agri-start-ups and global business.

- वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्

- COUNCIL OF SCIENTIFIC AND INDUSTRIAL RESEARCH

सामाजित सशक्तिकरण के लिए जिम्मेदार एआई

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पारंपरिक विकास बाधाओं को दूर करने और भारत में बड़े पैमाने पर सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को उत्प्रेरित करने में सक्षम है। एआई से वर्ष 2035 तक भारतीय अर्थव्यवस्था में 967 बिलियन अमेरिकी डॉलर और वर्ष 2025 तक भारत की जीडीपी में 450-500 बिलियन अमेरिकी डॉलर जुड़ने की उम्मीद है, जो देश के 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के जीडीपी लक्ष्य का 10% है।

वर्ष 2024 में जीपीएआई की अगुआई के तौर पर मीटी की झांकी भारत में सामाजिक सशक्तिकरण के लिए जिम्मेदारी को आगे बढ़ाने हेतु स्वास्थ्य सेवा, लॉजिस्टिक्स और शिक्षा में एआई का लाभ उठाने पर केन्द्रित है।

झांकी के अग्रभाग में एआई को चिन्हित करते हुए एक महिला रोबोट को विचारशील मुद्रा में दर्शाया गया है और इसके आधार पर एक चिप का उड़ी स्केल मॉडल चित्रित किया गया है। एलईडी लाइटों के साथ किरदारों पर सर्किट डिजाइन भारत को विकास की ओर ले जाने की एआई की ऊर्जा को प्रदर्शित करती है। मध्य भाग में अंगों के विजुअल विश्लेषण, डाक्टरों की सहायता से रोबोटिक हाथों से की जा रही सर्जरी के माध्यम से स्वास्थ्य के क्षेत्र में एआई की भूमिका का चित्रण किया गया है। एलईडी स्क्रीन जैव संकेतों, अंगों, उनकी स्थिति और कलर कोडिंग के आधार पर पार्सलों की पहचान करने और अलग-अलग करने के लिए लॉजिस्टिक्स में एआई के प्रयोग को प्रदर्शित करेगी। इसके अलावा सेल्फ डिलिवरी ड्रोन हैं जिनमें समुद्री यात्रा और पार्सलों की डेलिवरी में एआई का प्रयोग होता है। पिछले हिस्से में आक्ज्यूलस पहनकर वीआर के माध्यम से दूरस्थ कक्षा का संचालन करते हुए शिक्षिका की मूर्ति के माध्यम से शिक्षा में एआई की भूमिका को चित्रित किया गया है; स्क्रीन एक वास्तविक कलासरुम को दर्शाएगी। इसमें दृष्टिबाधित व्यक्तियों की समुद्रीयात्रा में सहायता करने में एआई की भूमिका के साथ-साथ ऑडियो विजुअल्स के माध्यम से मवेशियों के स्वास्थ्य की निगरानी करने में एआई के अनुप्रयोग को भी चित्रित किया गया है। छात्र इलेक्ट्रिक स्कूटरों पर सवार होकर इलेक्ट्रॉनिक गैजेटों के साथ कर्तव्य पथ पर आ जा रहे हैं।

- इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Responsible AI for Social Empowerment

Artificial Intelligence is a kinetic enabler to leapfrog traditional development barriers and catalyze large-scale socio-economic transformation in India. AI is expected to add USD \$967 billion to the Indian economy by 2035 and USD 450-500 billion to India's GDP by 2025, accounting for 10% of the country's USD 5 trillion GDP target.

As the Lead Chair of GPAI in 2024, MeitY's Tableau focuses on India leveraging AI in healthcare, logistics and education to further Responsible AI for Social Empowerment.

The front portion of tableau showcases a female robot, depicting AI, in a thinking posture and the base depicts a 3D scale model of a chip. Circuit design on the sides with LED lights showcases the energy that AI carries to propel India towards development. In the middle portion portrays role of AI in Health Sector through visual analysis of organs, robotic hands performing surgery, assisted by doctors. LED screen will show vital signs, organs, status and use of AI in Logistics for identification and segregation of parcels based on colour coding. Further, there are self-delivery drones that use AI to navigate and deliver parcels. The rear portion depicts role of AI in Education through female statue teacher wearing an oculus, conducting a class remotely through VR; Screen shall showcase an actual classroom. It also depicts application of AI in monitoring cattle health through audio visuals along with role of AI in helping visually impaired persons navigate. Students with electronic gadgets using electric scooters are moving on the Kartavya Path.

**-MINISTRY OF ELECTRONICS AND
INFORMATION TECHNOLOGY**





सागरमाला

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय की झांकी सागरमाला कार्यक्रम के माध्यम से बंदरगाह आधारित विकास को गति देने के लिए माननीय प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण को दर्शाती है।

मंत्रालय के इस प्रमुख कार्यक्रम ने टर्नअराउंड समय को कम करने में मदद की है, जिससे बंदरगाहों पर कार्गो प्रबंधन दक्षता में वृद्धि हुई है।

झांकी की अग्रभाग महिलाओं को अवसर प्रदान करने की मंत्रालय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसके परिणामस्वरूप गत 9 वर्षों में महिला नाविकों की संख्या में 1100% की वृद्धि हुई है। यह 'नारी शक्ति द्वारा नील अर्थव्यवस्था का संचालन है' का प्रतीक है, जो मंत्रालय की 'सागर सम्मान' पहल का मूल है। झांकी का केन्द्रीय सागरमाला कार्यक्रम के अंतर्गत बंदरगाह आधुनिकीकरण पहल के माध्यम से बंदरगाह दक्षता और क्षमता वृद्धि में हुई उपलब्धि को दर्शाता है। इससे प्रमुख बंदरगाहों पर क्षमता 800एमटीपीए से दोगुनी होकर 1617 एमटीपीए हो गई है। नई तकनीक और आधुनिकीकरण को अपनाकर, भारतीय बंदरगाहों ने वैश्विक मानकों के अनुरूप टर्नअराउंड समय प्राप्त कर लिया है। कुछ वर्ष पहले के 4-5 दिन के टर्नअराउंड समय की तुलना में अब यह घटकर 0.9 दिन हो गया है। 'अमृतकाल विज़न 2047' के अंतर्गत, बंदरगाहों के अंदर और आसपास औद्योगिक क्लस्टर विकसित करने के उद्देश्य से, बंदरगाह आधारित औद्योगिकीकरण की पहल से अर्थव्यवस्था को गति की आशा है, जिसके फलस्वरूप समग्र संभारकीय लागत में कमी आएगी। झांकी का पिछला भाग लाइटहाउस और क्रूज पर्यटन के विकास की दिशा में मंत्रालय की पहल को रेखांकित करता है। यह देश की समृद्ध समुद्री विरासत और क्रूज पर्यटन की क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए भारत सरकार की 'स्वदेश दर्शन' योजना के अनुरूप है।

SAGARMALA

The Tableau of Ministry of Ports, Shipping and Waterways depicts the vision of Hon'ble Prime Minister to catalyze Port-led development through the Sagarmala Programme.

This flagship Programme of the Ministry has helped reduce the turnaround time, thereby enhancing the cargo handling efficiency at Ports.

The Front portion of the tableau depicts the commitment of the Ministry to provide opportunities to women. This has led to 1100% increase in number of women seafarers over the last 9 years. This symbolizes "Nari Shakti Driving the Blue Economy", which is the core of "Sagar Samman" initiative of the Ministry. The central part of the tableau showcases achievement of port efficiency and capacity augmentation through port modernization initiatives under Sagarmala Programme. This has led to doubling of capacity at major ports from 800MTPA to 1617MTPA. By adopting new technology & modernization, Indian ports have achieved turnaround time at par with global standards. Against 4-5 days turnaround time a few years ago, it stands at 0.9 days today. Under the 'AmritKaal Vision 2047', the Port led industrialization initiative aimed at developing industrial clusters in and around ports is expected to drive the economy, bringing about a reduction in overall logistic cost. The rear portion of the tableau highlights the initiatives of the Ministry towards development of lighthouse and cruise tourism. This is in line with the 'Swadesh Darshan' Scheme of Government of India to showcase the rich maritime heritage of the Country and its potential for cruise tourism.

वाईब्रेंट विलेजेज

गृह मंत्रालय की वाइब्रेंट विलेजेज झांकी में प्रतीकात्मकता एवं विभिन्न थीमों के माध्यम से समृद्ध संस्कृति, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, सशक्त ग्रामों में सड़कों सहित अवसंरचनात्मक विकास का चित्रण किया गया है जो संवेदनशील, समग्र आर्थिक समरसता एवं समृद्धि का वाहक बने हुए हैं।

हमारे देश की सुरक्षा, सीमा पर स्थित गांवों पर निर्भर है, जो हमारे देश के अंतिम ही नहीं अपितु प्रथम गांव है। यह हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का महत्वपूर्ण और अद्वितीय दृष्टिकोण है, जिसके लिए फरवरी, 2022 में वाइब्रेंट विलेजेज कार्यक्रम की घोषणा की गई।

झांकी के अग्र भाग में अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक पोशाक में लोक नृत्यों तथा मंच पर हस्त शिल्प वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। ट्रेलर भाग अरुणाचल प्रदेश और इस क्षेत्र में ईको-पर्यटन की संभावनाओं से शुरू होता है जिसे टैरेस फार्मिंग, बागवानी उत्पादों और राज्य पक्षी / पशु (हॉर्नबिल और मिथुन) द्वारा दर्शाया गया है जो कि एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। इसके बाद सिक्किम में होमस्टे और लोकप्रिय रोडोडेंड्रोन पेड़ को दर्शाया गया है जोकि पर्यटन उद्योग को दर्शाता है। मध्य भाग में उत्तराखण्ड में धार्मिक पर्यटन के लिए ओम पर्वत और गंगा नदी को दर्शाया गया है, जिससे गांवों में जीवंतता और समृद्धि आ रही है। पिछले भाग में रिवर राफ्टिंग, खेलकूदों, पैराग्लाइडिंग और स्कीइंग जैसी गतिविधियों के माध्यम से हिमाचल प्रदेश में साहसिक पर्यटन के महत्व को दर्शाया गया है। अंतिम भाग में एक लद्दाखी घर और स्तूप को दर्शाया गया है और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के विकास के लिए सौर ऊर्जा के महत्व, प्रचुरता और इसके विभिन्न उपयोगों से लद्दाख में हो रहे विकास को दर्शाया गया है। बाईं एवं दाईं ओर एलईडी स्क्रीन पर वाइब्रेंट विलेजेज प्रोग्राम को प्रदर्शित किया गया है।

- गृह मंत्रालय

Vibrant Villages

Ministry of Home Affairs, Tableau on Vibrant Villages, through symbolism and various themes depicts how rich culture, activities and infrastructure development including roads in the Vibrant Villages are bringing vibrancy, holistic economic viability and prosperity.

The security of our country is dependent on the villages situated at the borders, which are not the last but the first villages of our country. This is a very important and unique vision of our Hon'ble Prime Minister Sh. Narendra Modi, for which the Vibrant Villages Programme was launched in February, 2022.

The front part of the Tableau portrays folk dances in traditional attire from Arunachal Pradesh, Sikkim, Uttarakhand, Himachal Pradesh, Ladakh and platform displaying handicraft items. The trailer portion starts with Arunachal Pradesh and Eco-tourism potential, depicted by terrace farming, horticulture products and State bird/animal (Hornbill and Mithun) which signifies a rich cultural heritage. Next is Sikkim depicting Homestays and popular Rhododendron trees reflective of a flourishing Tourism industry. The middle portion showcases Om Parvat and Ganga River for Religious Tourism in Uttarakhand leading to vibrancy and prosperity in the Villages. Rear section shows activities like river rafting, paragliding, skiing and how important Adventure Tourism is for Himachal Pradesh. Finally the Tableau depicts a Ladakhi House and Stupa, and importance, abundance of Solar Energy and its various usages leading to development in the UT of Ladakh. Videos on the LED screen on left and right sides display our Vibrant Villages Programmes.

- MINISTRY OF HOME AFFAIRS





जी 20 की अध्यक्षता की सफलता

वेदेश मंत्रालय की झांकी में भारत की अध्यक्षता में जी20 के सफल समापन और उसकी उपलब्धियों को दर्शाया गया है।

इसमें भारत के नेतृत्व में वैश्विक मुद्दों का महत्वाकांक्षी, निर्णायक, समावेशी और कार्रवाई उन्मुख समाधान दर्शाया गया है। इसके सामने के हिस्से में नालंदा महा विहार है, जिसके ऊपर जी20 का लोगो है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' या एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य का विषय हमारी धरती पर सभी प्रकार के जीवन के महत्व और उनके अंतर्संबंध को सिद्ध करता है। ट्रेलर में हमारी अध्यक्षता की प्राथमिकताओं के आधार पर प्रमुख उपलब्धियों को दर्शाया गया है। भारत की अध्यक्षता में अफ्रीकी संघ को पूर्ण सदस्य बनाने के निर्णय को नमस्ते मुद्रा में हाथ जोड़कर दर्शाया गया है, जिसमें एक में भारत का और दूसरे में अफ्रीकी संघ का झंडा दिखाया गया है।

किनारों पर #लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवन शैली) को दिखाया गया है। दो मोबाइल फोन पर वित्तीय लेनदेन डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) में भारत की सफलता को दर्शाता है। सिक्कों के ढेर से प्रकट होता एक पेड़ हरित विकास को दर्शाता है। किनारों पर क्वीन ऑफ मिलेट के साथ सर्वश्रेष्ठ - भोजन के रूप में श्रीअन्न के महत्व को दर्शाया गया है। दुनिया भर से महिलाओं की निरंतर प्रगति महिलाओं के नेतृत्व में विकास को दर्शा रही है। भारतमंडपम वह स्थान है जहां भारत की जी 20 की अध्यक्षता के तहत नेताओं का शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था और जहां नई दिल्ली घोषणा को सर्वसम्मति से अपनाया गया था। इसके ठीक नीचे कोणार्क चक्र की प्रतिकृति लगाई गई है जो सतत प्रगति का प्रतीक है, जिसे जी 20 नेताओं के साथ प्रधानमंत्री के 'वेलकम हैंडशेक' के दौरान बैकड्रॉप के रूप में लगाया गया था। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में इस सफल जन अध्यक्षता के साथ, भारत विश्व मित्र के रूप में उभरा है।

Successful G20 Presidency

The MEA tableaux depicts successful completion of India's G20 Presidency and its achievements.

It reflects India's leadership of addressing global issues in an ambitious, decisive, inclusive and action oriented manner. The front part features Nalanda Maha Vihara, surmounted by the G20 Logo. The theme 'Vasudhaiva Kutumbakam' or one Earth, One Family, One Future affirms the value of all life and their interconnectedness on our planet. The trailer depicts major achievements based on Presidency priorities. Indian Presidency's decision to make African Union a full member is shown by joining of hands in Namaste mudra, one showing Indian and another African Union's flags.

The sides have #Life (Lifestyle for Environment) installations. Financial transactions over two mobile phones depict India's success in Digital Public Infrastructure (DPI). A tree coming out of heap of coins depict the Green Development. On the sides value of millets as super-food is depicted with Queen of Millets. Spiral upward movement of woman from across the world is depicting Women led development. Bharatmandapam is where the Leaders Summit under India's G20 Presidency was held and where New Delhi Declaration was unanimously adopted. Right below is a replica of Konark wheel symbolising continuous progress, which served as the backdrop for Prime Minister's welcome handshake with G20 leaders. With this successful People's Presidency under the leadership of Prime Minister, India emerged as Vishwa Mitra.

- विदेश मंत्रालय

- MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS

भारत – लोकतंत्र की जननी

इस झांकी की थीम 'भारत - लोकतंत्र' की जननी है। भारतीय निर्वाचन को विश्व में अन्यत्र भी मानव एवं वस्तुओं के आवागमन का वृहदतम शांतिकालीन संचारिकीय कार्य माना गया है। यह झांकी देश में मुक्त, निरपेक्ष सर्व समावेशी, सुगम एवं भागीदारीपूर्ण निर्वाचन के आयोजन को प्रदर्शित करती है।

झांकी के अग्र भाग में स्याही लगी अंगुली को दर्शाया गया है जिसे इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) पर बटन दबाते और वोट डालते हुए दर्शाया गया है। यह प्रस्तुति यह दर्शाती है कि भारत का निर्वाचन आयोग एक सर्वसमावेशी – लोकतंत्र का समर्थक है जो प्रत्येक नागरिक को उसके लिंग, जाति, धर्म अथवा पृष्ठभूमि के निरपेक्ष सशक्त बना रहा है। संसदीय निर्वाचन 2024 के आयाम को दर्शाया गया है जिसमें 12 लाख मतदान केंद्रों में वोट देने के लिए लगभग 96 करोड़ मतदाताओं से सम्पर्क किया जाएगा। लगभग 1.5 करोड़ कार्मिक एक निर्धारित समय में इस निर्वाचन का आयोजन करेंगे। ट्रेलर के दोनों ओर मतदान की सरलता को दर्शाया गया है जिसके द्वारा आयोग सभी मतदान केंद्रों पर आश्वस्त न्यूनतम सुविधाएं सुनिश्चित करता है। आयोग ने घर से मतदान की सुविधा – विशिष्ट रूप से पात्र निःशक्त जनों (पीडब्ल्यूडी) और 80 वर्ष से अधिक आयु के मतदाताओं के लिए शुरू की है। 'नर्थिंग लाइक वोटिंग – आईवोट फॉर श्योर' के सिद्धांत द्वारा मार्गदर्शित निर्वाचन आयोग यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक मतदाता को मतदान के आयोजन के दौरान आनन्ददायक मतदान का अनुभव प्राप्त हो। समाज के विभिन्न वर्गों का पंक्ति में खड़ा होना प्रदर्शित किया गया है, जो देश की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है।

झांकी के पिछले भाग में कोई मतदाता छूट न जाए के प्रयास में ईसीआई के प्रयास चाहे वह असीम भौतिक चुनौतियों वामपथ प्रभावित उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों की हों, सूखे अथवा शीत रेगिस्तानी क्षेत्रों की हों, वर्षाआच्छादित पर्वत चोटियां हों, तटीय क्षेत्र आदि हों को विजित करने के लिए भौगोलिक विविधता के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

चलते – फिरते कलाकार यह दर्शाते हैं कि आयोग निर्वाचन के सभी हितधारकों के लिए आईटी पारिस्थितिकी तंत्र का उपयोग करने में सक्षम है।

- भारत निर्वाचन आयोग

India – Mother of Democracy

The theme of Tableau is 'India-Mother of Democracy'. Indian Parliamentary Elections, is considered as the biggest peacetime logistics exercise of movement of man and material anywhere in the world. This depicts conduct of free, fair, inclusive, accessible and participative elections in the country.

The frontal tableau represents an inked finger pressing a button and casting a vote on an Electronic Voting Machine (EVM). This depiction emphasizes that ECI champions an inclusive democracy, empowering every citizen, regardless of their gender, caste, religion or background. The magnitude of the Parliamentary Election 2024, is depicted, whereby approx. 96 Crore electors will be touched for voting in 12 lakh polling stations. About 1.5 Crore personnel will conduct elections with the precision of a clock. The sides of the Trailer, depicts the ease of voting whereby the Commission ensures Assured Minimum Facilities at all polling stations. The Commission has introduced 'Home Voting facility' – specifically for eligible People with Disabilities (PwD) and 80 plus electors. Guided by the principle 'Nothing Like Voting, I Vote for sure', Election Commission ensures that every voter has a delightful voting experience, immersed in election festivities. Different sections of the society have been depicted as standing in the queue, showcasing cultural diversity of the country.

In the rear portion, ECI's effort towards 'No voter to be left behind' to overcome the extreme physical challenges, whether its interior villages of Left Wing Extremism Affected areas, dry or cold desert areas, snow-clad peaks, coastal areas, etc. has been showcased through a geographical diversities.

The walking artists depicts that Commission is able to utilize the IT ecosystem to make elections friendly for all stakeholders.

- ELECTION COMMISSION OF INDIA





सेंट्रल विस्टा- विकसित भारत का प्रतिबिम्ब

इस वर्ष केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की फूलों की झांकी सेंट्रल विस्टा की जिसमें आधुनिक, सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित भारत के प्रतिबिम्ब को प्रदर्शित कर रही है जिसमें कर्तव्यपथ, नई संसद भवन एवं नव स्थापित नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा को प्रदर्शित किया गया है।

आजादी के 75 वर्ष बाद गुलामी की याद दिलाते राजपथ के नाम से देश मुक्त हुआ। नया विकसित कर्तव्यपथ एवं नया संसद भवन विश्व के मानचित्र पर अमिट छाप छोड़ता है। यह विश्वपटल पर अपनी नई पहचान बनाने एवं तेजी से विकास करते नए भारत का प्रतिबिम्ब है। यह आजादी के अमृतकाल में देश को समर्पित एक बेमिसाल सौगात है। यह प्राकृतिक संरक्षण, भारतीय संस्कृति और आधुनिकता का संतुलन बनाते हुए विकसित भारत का संदेश दे रहा है।

झांकी के सामने के हिस्से में नव स्थापित नेताजी सुभाष जी की प्रतिमा को सलामी मुद्रा में दर्शाया गया है जो कि नेताजी को नमन करने एवं कृतज्ञता को प्रकट करने का स्वर्णिम अवसर है जो देश के लिए सभी नागरिकों को जीने-मरने की हमेशा प्रेरणा एवं ऊर्जा का नवसंचार प्रदान करती है। झांकी के मध्य हिस्से में नवनिर्मित कर्तव्यपथ को दिखाया गया है। झांकी के पीछे के हिस्से में नये संसद भवन को दिखाया गया है। झांकी के दोनों तरफ राष्ट्रीय पक्षी मोर को दिखाया गया है। आंखों को सुकून देने वाले अनुभव को स्थापित करने के लिए पूरी झांकी को पुष्पों के प्राकृतिक, जीवंत रंगों से तैयार किया गया है।

- केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

Central Vista -Viksit Bharat ka Partibimb

This year, Central Public Works Department's Flower Tableau Central Vista is showcasing the reflection of modern, strong, self-reliant and developed India in which Kartavya Path, New Parliament House and the newly installed statue of Netaji Subhas Chandra Bose have been displayed.

After 75 Years of Independence, the country became free from the name of Rajpath which was reminiscent of slavery. The Newly Developed Kartavya Path and New Parliament House leave an indelible mark on the world map. This is a reflection of the new India making its mark on the world stage and rapidly developing. This is an unmatched gift dedicated to the country in the golden age of independence. It is giving the message of developed India by balancing natural conservation, Indian culture and modernity.

In the front part of the tableau, the newly installed statue of Netaji Subhas ji has been shown in a saluting posture, which is a golden opportunity to bow and express gratitude to Netaji who always inspires and energizes all the citizens to live and die for the country. The newly constructed Kartavyapath has been shown in the central part of the tableau. The new Parliament building is shown in the rear part of the tableau. The national bird peacock is shown on both sides of the tableau. The entire tableau is being crafted in flowers in their natural, vibrant colour to establish eye pleasing experience.

- CENTRAL PUBLIC WORKS DEPARTMENT

भारत - लोकतंत्र की जननी

भारत, ज्ञान की प्राचीन भूमि न केवल गहन आध्यात्मिक शिक्षाओं को जन्म दिया, बल्कि लोकतंत्र के बीजों का पोषण भी किया, जो बाकी दुनिया के पहचानने से बहुत पहले ही फल-फूल रहे थे।

प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक भावना केवल एक राजनीतिक विचारधारा ही नहीं थी, बल्कि आध्यात्मिकता और समाज के क्षेत्रों को शामिल करने वाला एक समग्र लोकाचार थी। ऋग्वेद इस सार को "एकम् सद विप्रा बहुधा वदन्ति" नामक कालजयी श्लोक में समाहित करता है, जो विविधता में एकता, लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांत पर जोर देता है।

पाणिनि की अष्टाध्यायी जैसे संस्कृत ग्रंथों और बौद्ध विहित कार्यों ने लोकतांत्रिक आदर्शों की नींव रखी, जबकि कौटिल्य के अर्थशास्त्र ने शासन सिद्धांतों को आगे बढ़ाया। 5वीं शताब्दी से लेकर पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व तक, ऐतिहासिक संदर्भ प्रचुर संख्या में हैं, जो लोगों द्वारा सक्रिय रूप से अपने शासकों को चुनने की प्रथा को दर्शाते हैं। भारत के स्वर्णिम गुप्त युग में रुद्रदामन प्रथम, राजा खारवाला के शिलालेख और प्रयागराज में समुद्रगुप्त का स्तंभ लोकतांत्रिक सिद्धांतों की व्यापकता की पुष्टि करता है।

श्रेणी संघ नामक एक बहुस्तरीय प्रणाली सामने आती है, जिसका उदाहरण दक्षिण भारत के उत्तरमेरुर शहर में है जिसके शिलालेख उम्मीदवारों के चयन के लिए पात्रता मानदंड और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के तरीकों का विवरण देते हैं।

लोकतांत्रिक परंपराओं के इस समृद्ध चित्रपट को संस्कृति मंत्रालय द्वारा दो झांकीयों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। एक गतिमान मंच पर उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली डिजिटल तकनीक का उपयोग, जो दर्शकों को उड़ी यात्रा के माध्यम से भारत की लोकतांत्रिक यात्रा को दिखायेगा।

प्रथम भाग में बुद्ध और जैन साधक संवाद को बढ़ाते हुये दर्शाया गया है और दूसरे भाग में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर द्वारा प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद को भारतीय संविधान सौंपा जा रहा है।

अंत में : घुमावदार एलईडी में एनामॉर्फिक डिस्प्ले (जिसमें महाजनपद, हम्पी का रथ, संविधान सभा, भारत के चुनाव जैसे लोकतांत्रिक प्रतीक) को दिखाया जायेगा।

Bharat : Mother of Democracy

Bharat, the ancient land of wisdom, not only birthed profound spiritual teachings but also nurtured the seeds of democracy, flourishing long before the world recognized its significance.

The democratic spirit in ancient India was not merely a political ideology but a holistic ethos encompassing the realms of spirituality and society. The Rigveda encapsulates timeless verse, "Ekam Sad Vipra Bahudha Vadanti," emphasizing unity in diversity, a foundational principle of democracy.

Sanskrit texts like Panini's Ashtadhyayi and Buddhist canonical works laid the groundwork for democratic ideals, while Kautilya's Arthashastra further expounded on governance principles. From the 5th century to the 1st millennium BCE, illustrating the practice of people actively choosing their leaders. Inscriptions by Rudradaman I, King Kharevala, and the pillar of Samudragupta in India's golden Gupta era at Prayagraj affirm the prevalence of democratic principles.

A multi-layered system called Shreni Sangha emerges, exemplified in the town of Uthiramerur in South India.

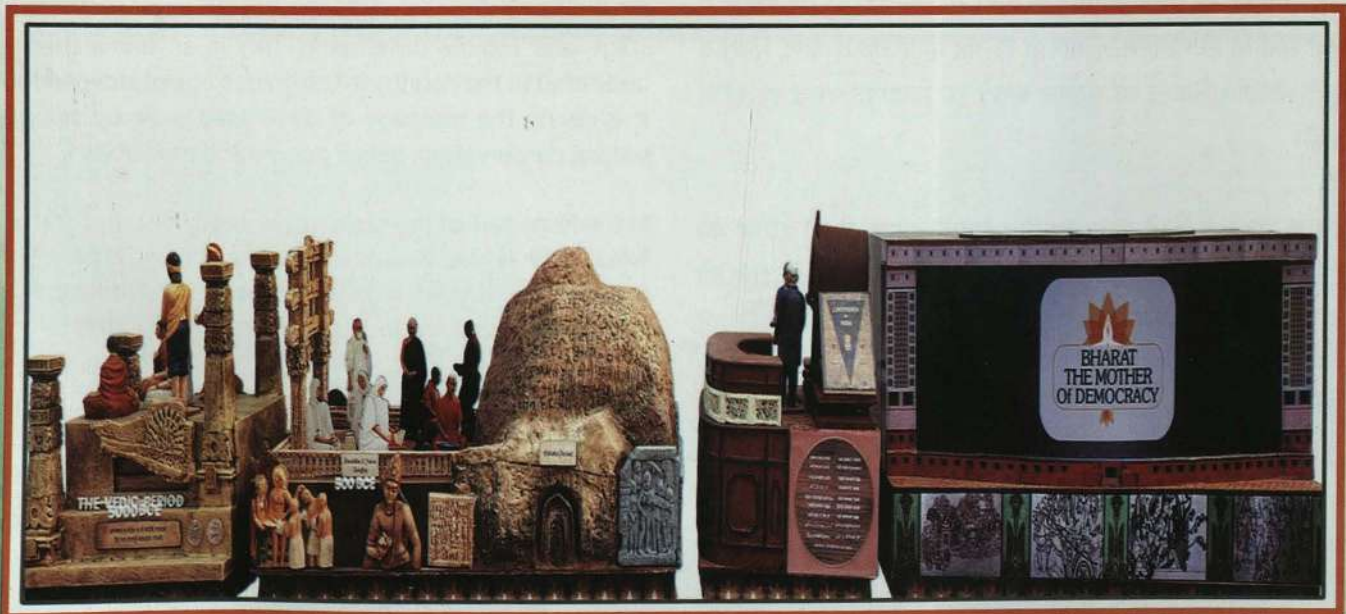
This rich tapestry of democratic traditions is now being presented uniquely through the tableau of two trailers and two tractors. High-resolution digital technology on a moving platform, offering the audience a 3D journey with cutting-edge technology in showcasing the timeless spirit of Indian democracy.

First part depicts Buddha and Jain sages promoting dialogue and second part showcases Indian Constitution being handed over to first president Rajendra Prasad by Dr B. R. Ambedkar.

Rear portion showcases Anomorphic display in Curvetured LED (In which democratic symbols like Mahajanpadas, Chariot of Humpy, Constituent Assembly, Elections of India).

- संस्कृति मंत्रालय

- MINISTRY OF CULTURE



वन्दे भारतम् - नृत्य उत्सव - 2024 नारी शक्ति

नारी शक्ति की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति—संकल्प से सिद्धि। यह तीसरा वर्ष है, जब रक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय संयुक्त रूप से यह सांस्कृतिक झांकी प्रस्तुत कर रहे हैं।

कर्तव्य पथ पर सबसे आगे, विभिन्न प्रकार के लोक एवं जनजातीय ताल वाद्यों का वादन करते 112 कलाकार। नारी शक्ति की प्रतीक इन महिला कलाकारों में से 20 के हाथों में महाराष्ट्र का ढोल और ताशा है, 16 कलाकार तेलंगाना का डप्पू बजा रही हैं, 16 कलाकार पश्चिम बंगाल के ढाक और ढोल पर ताल दे रही हैं, पश्चिम बंगाल से पधारी 8 कलाकार शंख बजा रही हैं, 10 कलाकारों के हाथों में चेंडा है, 30 कलाकार कर्नाटक का ढोलू कुनिथा बजा रही हैं, 4-4 कलाकारों के हाथ में क्रमशः नादस्वरम, तुतारी और झांझ हैं। कर्तव्य पथ पर भारतीय संस्कृति की अद्वितीय छटा का प्रथम विहंगम प्रदर्शन। ताल के साथ कर्नाटक संगीत के बौली राग की धुन से सृजित होता अद्भुत परिदृश्य।

और अब वंदे भारतम्। 1500 नृत्यांगनाओं का जत्था। भारत की सांस्कृतिक विरासत की संरक्षक और पोषक नारियाँ। कर्तव्य पथ के इस मंच पर विविधता में एकता का संदेश देती हुई। देश के विभिन्न राज्यों में विशिष्ट रूप से प्रचलित 30 लोक एवं जनजातीय नृत्य शैलियों, एवं कूचिपूड़ी, कथक, भरतनाट्यम, सत्रिय, मोहिनीआट्टम, ओडिसी और मणिपुरी नृत्यों के साथ ही समसामयिक शास्त्रीय नृत्य और बॉलिवुड शैली के नृत्यों का समवेत् और भव्य प्रदर्शन। 120 नृत्यांगनाओं ने विविध जनजातीय और लोक प्रदर्शनकलाओं से संबंधित मुखौटे भी धारण किए हैं और 120 नृत्यांगनाएँ गुजरात, मणिपुर, केरल और महाराष्ट्र की पारंपरिक छतरियाँ और दूसरी कलात्मक वस्तुओं के साथ नृत्य प्रस्तुत कर रही हैं। कुल 1500 महिला कलाकारों में, 199 जनजातीय नृत्य की कलाकार हैं, 486 लोक नृत्य की कलाकार हैं, 399 नृत्यांगनाओं का संबंध शास्त्रीय नृत्यों से हैं, और बॉलिवुड की भी 56 नृत्यांगनाएँ हैं। यहाँ पर आप जो मुखौटे देख रहे हैं, उनमें से 57 मुखौटों का संबंध जनजातीय नृत्यों से हैं जबकि 63 मुखौटे लोक नृत्यों में प्रयुक्त होते हैं। संस्कृति मंत्रालय की स्वायत्त संस्था, संगीत नाटक अकादेमी और क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के अथक रचनात्मक श्रम का प्रतीक, इस भव्य प्रस्तुति में देश के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों की महिला कलाकार भारत के सांस्कृतिक वैभव का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

जनभागीदारी के माध्यम से खुली प्रक्रिया के तहत कलाकारों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गईं। रिपर्टरीज़ और नृत्य स्कूलों से सम्पर्क किया गया और उनसे प्रविष्टियाँ जमा करने के लिए कहा गया। इस प्रकार दोनों ही प्रारूपों से 10-10 समूहों का चयन किया गया। इस हेतु 16 सितम्बर 2023 को

VANDE BHARATAM - NRITYA UTSAV - 2024 NAARI SHAKTI

Cultural expression of Nari Shakti – Sankalp Se Siddhi. This is the third consecutive year that the Ministry of Defence and the Ministry of Culture are jointly presenting this cultural tableau.

The leading troupe marching on Kartavya Path, consists of 112 female artists, playing various types of folk and tribal percussion instruments, symbolizing women power. Twenty of these women artists are holding the dhol and tasha of Maharashtra, 16 artists playing the dappu of Telangana, 16 artists the dhak and dhol of West Bengal, and eight artists from West Bengal sounding the Shankha. Ten artists have Chenda in their hands, 30 artists are playing Karnataka's Dholu Kuniitha, while four artists each have Nadaswaram, Tutari and Jhanjh in their hands respectively. This is the first panoramic display of the unique flavour of Indian culture on the Kartavya Path. A wonderful scenario is being created by the tune of Bowli raga of Carnatic music along with the rhythm.

And now Vande Bharatam which consists of a huge group of 1500 dancers. Women are the protectors and nurturers of India's cultural heritage. The present group is conveying the message of unity in diversity on this platform of Kartavya Path. An ensemble and grand performance of 30 folk and tribal dance styles prevalent in different States of the country, and Kuchipudi, Kathak, Bharatanatyam, Sattriya, Mohiniattam, Odissi and Manipuri dances, as well as contemporary classical dances and Bollywood style of dances are being showcased here. About 120 dancers are also donning masks related to various tribal and folk performing arts and are performing with traditional umbrellas and other artistic items from Gujarat, Manipur, Kerala and Maharashtra. Of the total 1500 female artists, 199 are tribal artists, 486 are folk artists, 399 dancers belong to classical dances, and there are also 56 dancers from Bollywood. Out of the masks that can be seen here, 57 masks relate to tribal dances while 63 masks are used in folk dances. This presentation symbolizes the tireless creative work of Sangeet Natak Akademi, the national academy of the performing arts in India and an autonomous body of the Ministry of Culture, and all seven Zonal Cultural Centres. In this grand performance, women artists from different States and regions of the country are representing the cultural splendour of India.

Entries were invited under Jan Bhagidari - Open selection or approaching the Repertories and Dance Schools to submit entries. And by this process, 10 groups each were selected from both the formats. For this, an advertisement had been issued on 16 September 2023. The last date of receipt

विज्ञापन जारी किया गया था। प्रविष्टियाँ जमा कराने की अंतिम तिथि 27 अक्टूबर 2023 थी। निर्धारित तिथि तक 534 समूहों से प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। समूहों से कहा गया कि वह 04 शैलियों—शास्त्रीय, लोक, जनजातीय और समकालीन में से किसी एक में ऑनलाइन वीडियो प्रविष्टियाँ भेजें। प्रविष्टियों की प्रारंभिक ऑनलाइन जांच 5-7 नवंबर, 2023 तक ज़ोनल कल्चरल सेंटर और संगीत नाटक अकादेमी द्वारा गठित क्षेत्रीय जांच समिति द्वारा की गई। लगभग 1200 महिला कलाकारों को शॉर्टलिस्ट करने के लिए क्षेत्रीय जांच समिति द्वारा अनुशंसित प्रविष्टियों की 9-10 नवंबर, 2023 तक राष्ट्रीय स्तर की जांच समिति द्वारा पुनः जांच की गई। अंतिम रीहर्सल के लिए प्रतिभागियों को 26 दिसंबर 2023 को दिल्ली बुलाया गया। रीहर्सल मेघदूत, पूसा इंस्टीट्यूट और कर्तव्य पथ, नई दिल्ली में किये गए।

of entries was 27 October 2023. Entries from 534 Groups were received within the due date. Online entries were sought as videos in any of the 04 genres—Classical, Folk, Tribal and Contemporary dances. Initial scrutiny of entries were done online by a Regional Scrutiny Committee by a panel of judges provided by ZCC and SNA from 5th to 7th November 2023. The entries recommended by the Regional Scrutiny Committee were further scrutinized by a National Level Scrutiny Committee from 9-10th November 2023 to shortlist about 1200 women artists. The participants have arrived in Delhi from 26th December 2023 onwards for final rehearsals. Rehearsals were carried out at Meghdoot Complex, Pusa Institute and Kartavya Path in New Delhi.

39

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार, 2024
PRADHANMANTRI RASHTRIYA BAL PURSKAR – 2024

क्र. सं. Sr. No.	नाम Name	राज्य State
वीरता BRAVERY		
1.	आदित्या विजय ब्रम्हाने AADITYA VIJAY BRAMHANE	महाराष्ट्र MAHARASHTRA
कला व संस्कृती ART & CULTURE		
2.	अनुष्का पाठक ANUSHKA PATHAK	उत्तर प्रदेश UTTAR PRADESH
3.	अरिजीत बनर्जी ARIJEET BANERJEE	पश्चिम बंगाल WEST BENGAL
4.	अरमान उभरानी ARMAAN UBHRANI	छत्तीसगढ़ CHHATTISGARH
5.	हेत्वी कांतिभाई किमसूर्या HETVI KANTIBHAI KHIMSURIYA	गुजरात GUJARAT
6.	ईशफाक हमीद ISHFAQ HAMID	जम्मू व कश्मीर JAMMU & KASHMIR
7.	एमडी हुसैन MD HUSSAIN	बिहार BIHAR
8.	पेंडयला लक्ष्मी प्रिया PENDYALA LAXMI PRIYA	तेलंगाना TELANGANA
नवाचार INNOVATION		
9.	सुहानी चौहान SUHANI CHAUHAN	दिल्ली DELHI

विज्ञान प्रौद्योगिकी
SCIENCE & TECHNOLOGY

- | | | |
|-----|---------------------------|-----------------------|
| 10. | आर्यन सिंह
ARYAN SINGH | राजस्थान
RAJASTHAN |
|-----|---------------------------|-----------------------|

सामाज-सेवा
SOCIAL SERVICE

- | | | |
|-----|----------------------------------|-------------------------------|
| 11. | अवनीश तिवारी
AVNISH TIWARI | मध्य प्रदेश
MADHYA PRADESH |
| 12. | गरिमा
GARIMA | हरियाणा
HARYANA |
| 13. | ज्योत्सना अख्तर
JYOTSNA AKTAR | त्रिपुरा
TRIPURA |
| 14. | सय्यम मजूमदार
SAIYAM MAZUMDER | असम
ASSAM |

खेल
SPORTS

- | | | |
|-----|--|-------------------------------------|
| 15. | अदित्या यादव
AADITYA YADAV | उत्तर प्रदेश
UTTAR PRADESH |
| 16. | चार्वी. ए
CHARVI A. | कर्नाटक
KARNATAKA |
| 17. | जेसिका नेयई सरींग
JESSICA NEYI SARING | अरुणाचल प्रदेश
ARUNACHAL PRADESH |
| 18. | लिनथोई चंनामबा
LINTHOI CHANAMBAM | मणिपुर
MANIPUR |
| 19. | आर. सूर्या प्रसाद
R. SURYA PRASAD | आन्ध्र प्रदेश
ANDHRA PRADESH |

41





Ministry of Defence
Ceremonials Division
Room No. 1, South Block, New Delhi

